Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2023-25

www.dainikvishwapariwar.com

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 118 ● वर्ष : 14 ● रायपुर, गुरूवार 12 नवम्बर 2026 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार



परिश्रम के द्वारा मंजिल तब प्राप्त होती है, जब अपना ध्यान मजबूत होता है।

Hand work begets us the destination only when we have determined meditation.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

समाचार सार

क्वालकॉम ने भारत में 1000 कर्मचारियों की छंटनी शुरू की

नई दिल्ली। अमेरिकी टेक्नोलॉजी कंपनी क्वालकॉम ने भारत में कर्मचारियों की छंटनी शुरू कर दी है। यह कदम कंपनी के वैश्विक स्तर पर कर्मचारियों की संख्या में कटौती के व्यापक कार्यक्रम का हिस्सा है। रिपोर्ट्स के अनुसार, इस प्रक्रिया से देश में क्वालकॉम के करीब 1,000 कर्मचारी प्रभावित हो सकते हैं। यह संख्या भारत में कंपनी के कुल कर्मचारियों का लगभग पांच से छह फीसदी है। छंटनी की शुरुआत क्वालकॉम के बेंगलुरु स्थित कार्यालय से हुई है। इससे मुख्य रूप से वरिष्ठ इंजीनियर और कई वर्षों का अनुभव रखने वाले कर्मचारी प्रभावित हुए हैं।

मूडीज ने भारत की वृद्धि दर 7 फीसदी रहने का अनुमान लगाया

नई दिल्ली। मूडीज रेटिंग्स ने बुधवार को भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए मौजूदा वित्त वर्ष में 7 फीसदी की उच्च वृद्धि दर का अनुमान लगाया है। यह अनुमान व्यापक आर्थिक गति और ऊर्जा आपूर्ति झटके के प्रति देश के लचीलेपन के कारण बढ़ाया गया है। मूडीज ने अपने ग्लोबल मैक्रो आउटलुक 2027-28 में यह जानकारी दी। यह संशोधन भारत की मजबूत आर्थिक स्थिति को दर्शाता है। हालांकि, वृद्धि के लिए निकट अवधि के जोखिम बने हुए हैं। घरेलू उपभोग बढ़ती मूल्य दबावों के कारण कमजोर है। खुदरा मुद्रास्फीति भारतीय रिजर्व बैंक की 2-6 फीसदी की लक्ष्य सीमा के ऊपरी छोर के करीब है। कमजोर दक्षिण-पश्चिम मानसून और मजबूत होती अल नीनो की स्थिति कृषि उत्पादन पर असर डालेगी। इससे ग्रामीण मांग भी प्रभावित होगी।

दूध की कीमतों में दो रुपये से चार रुपये तक का इजाफा



नई दिल्ली। खुदरा महंगाई के मोर्चे पर आम उपभोक्ता की जेब पर एक और बड़ा बोझ पड़ने जा रहा है। मदर डेयरी के बाद देश की प्रमुख डेयरी कंपनी अमूल ने भी दूध की कीमतों में वृद्धि की घोषणा की है। कंपनी ने बुधवार को एक बयान जारी कर यह जानकारी दी है। इस बढ़ोतरी से आम उपभोक्ताओं की जेब पर सीधा आर्थिक असर पड़ेगा। अमूल ने दूध के दाम में दो रुपये से लेकर चार रुपये प्रति लीटर तक की वृद्धि की है। यह मूल्य वृद्धि अमूल के विभिन्न दूध उत्पादों पर लागू होगी। कंपनी के इस फैसले से दैनिक घरेलू बजट प्रभावित होगा। जीसीएमएमएफ ने इस बढ़ोतरी के लिए जानवरों के चारे, पैकेजिंग मटीरियल और फ्यूल की बढ़ती कीमतों को ज़िम्मेदार ठहराया है।

स्वच्छ सर्वेक्षणः राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने विजेताओं को सम्मानित किया

नवी मुंबई देश का सबसे साफ शहर

नई दिल्ली (ए)। देश के सबसे साफ शहरों की तस्वीर सामने आ गई है। स्वच्छ सर्वेक्षण 2025-26 में महाराष्ट्र के नवी मुंबई ने राष्ट्रीय स्वच्छ शहर श्रेणी में पहला स्थान हासिल किया है। गुजरात का सूरत दूसरे और आंध्र प्रदेश का विजयवाड़ा तीसरे स्थान पर रहा।

वहीं, मध्य प्रदेश के रीवा ने सबसे स्वच्छ नदी तटीय शहरों की श्रेणी में बाजी मारी, जबकि उत्तराखंड के रुद्रपुर को सबसे स्वच्छ हिमालयी शहर चुना गया। इस बार सर्वेक्षण में नदी किनारे बसे शहरों, समुद्री तटों और पहाड़ी क्षेत्रों की सफाई को भी अलग-अलग श्रेणियों में रखा गया। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने बुधवार को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में स्वच्छ सर्वेक्षण पुरस्कार 2025-26 प्रदान किए। ये पुरस्कार स्वच्छ भारत मिशन-शहरी के तहत शहरों में सफाई और स्वच्छता के लिए किए गए प्रयासों को मान्यता देने के लिए दिए गए। यह सर्वेक्षण का दसवां संस्करण है। इस साल इसकी थीम स्वच्छता की नई पहल-बढ़ाएं हाथ, करें सफाई साथ रखी गई। इसका उद्देश्य शहरों में सफाई व्यवस्था सुधारने के साथ आम लोगों को भी इस अभियान से जोड़ना है।



नवी मुंबई के बाद किन शहरों ने हासिल किया स्थान?-राष्ट्रीय स्वच्छ शहर श्रेणी में नवी मुंबई पहले, सूरत दूसरे और विजयवाड़ा तीसरे स्थान पर रहे। इस श्रेणी में शहरों की सफाई, कचरा प्रबंधन और स्वच्छता व्यवस्था को परखा गया। इसका उद्देश्य नगर निकायों के बीच बेहतर काम करने की प्रतिस्पर्धा बढ़ाना है। स्वच्छ शहर लीग के तहत भी शहरों के प्रदर्शन का आकलन सफाई और कचरे के सही प्रबंधन जैसे मानकों पर किया जाता है। इस तरह की रैंकिंग से स्थानीय निकायों को अपनी व्यवस्था सुधारने और शहरों को साफ रखने के लिए प्रोत्साहन मिलता है।

नदी किनारे बसे शहरों में किसने मारी बाजी?-नदी तटीय शहरों की श्रेणी में मध्य प्रदेश के रीवा ने पहला स्थान हासिल किया। छत्तीसगढ़ का बिलासपुर दूसरे और उत्तर प्रदेश का वाराणसी तीसरे स्थान पर रहा। वहीं, समुद्र तट वाले शहरों की श्रेणी में ओडिशा का पुरी पहले स्थान पर रहा।

केरल के अलप्पुझा को दूसरा और महाराष्ट्र के रत्नागिरी को तीसरा स्थान मिला। इन श्रेणियों में नदी और समुद्र के किनारे बसे शहरी इलाकों की सफाई को महत्व दिया गया। सर्वेक्षण में जल स्त्रोतों और उनके आसपास के क्षेत्रों को भी पहले से अधिक दायरे में शामिल किया गया।

हिमालयी शहरों और मेंटर सिटी श्रेणी में कौन रहा आगे?-हिमालयी शहरों की श्रेणी में उत्तराखंड के रुद्रपुर ने पहला स्थान हासिल किया। जम्मू दूसरे और जम्मू-कश्मीर का शोपियां तीसरे स्थान पर रहा। इसके अलावा स्वच्छ शहर जोड़ी पहल के तहत अहमदाबाद को पहला मेंटर शहर चुना गया, जबकि गुजरात के साणंद को उसका मेंटी शहर माना गया। इंदौर दूसरे स्थान पर मेंटर शहर रहा और मध्य प्रदेश के देपालपुर को उसका मेंटी शहर चुना गया। इस पहल में बेहतर प्रदर्शन करने वाले शहरों को दूसरे शहरों की सफाई व्यवस्था सुधारने में मार्गदर्शन देने की भूमिका दी गई है।

स्वच्छ सर्वेक्षण 2025-26 की प्रमुख श्रेणियों के विजेता

राष्ट्रीय स्वच्छ शहर-नवी मुंबई, सूरत, विजयवाड़ा।
स्वच्छ नदी तटीय शहर- रीवा, बिलासपुर, वाराणसी।
स्वच्छ समुद्री तटीय शहर- पुरी, अलप्पुझा, रत्नागिरी।
स्वच्छ हिमालयी शहर-रुद्रपुर, जम्मू, शोपियां।
मेंटर शहर- अहमदाबाद पहले और इंदौर दूसरे स्थान पर।

कुलगाम में आतंकी हमला, हमले में तीन जवान घायल



जम्मू (ए)। कश्मीर घाटी के कुलगाम जिले में आतंकवादियों ने सीआरपीएफ दल पर गोलीबारी की है। गोलीबारी में सीआरपीएफ के तीन जवान घायल हो गए हैं। घायल जवानों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। आतंकी हमला गश्त के दौरान किया गया। हमले के बाद आतंकियों ने भागने की कोशिश की।

कुलगाम क्विक रियेक्शन टीम हमले की जगह पहुंच गई है। टीम ने पूरे इलाके को घेर लिया है। सीआरपीएफ के अनुसार, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के दो जवान आज दोपहर जम्मू-कश्मीर के कुलगाम जिले में एक नाके पर तैनात सुरक्षाकर्मियों पर अज्ञात मोटरसाइकिल सवार हमलावरों द्वारा की गई गोलीबारी में घायल हो गए। यह घटना दोपहर करीब 2.15 बजे हुई जब हमलावरों ने मौके से भागने से पहले सीआरपीएफ कर्मियों पर गोलियां चलाईं। घायल जवानों को इलाज के लिए अनंतनाग जिले के एक अस्पताल में स्थानांतरित कर दिया गया है।

शुरुआती जानकारी में 46वीं बटालियन केसीआरपीएफ कैंप को निशाना बनाए जाने की बात सामने आई थी, हालांकि बाद में सीआरपीएफ ने नाके पर तैनात जवानों पर हमले की पुष्टि की। घटना के बाद सुरक्षा बलों ने इलाके की घेराबंदी कर दी है और हमलावरों की तलाश के लिए अभियान शुरू किया गया है। पुलिस और सुरक्षा एजेंसियां मामले की जांच कर रही हैं।

पूर्व उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ की बिगड़ी तबीयत

सुबह टहलते समय गिरकर हुए थे बेहोश, जानें कहां चल रहा है इलाज

नई दिल्ली (ए)। देश के पूर्व उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ को स्वास्थ्य संबंधी जांच के लिए दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में भर्ती कराया गया है। यह जानकारी सूत्रों के हवाले से सामने आई है।



अचानक तबीयत बिगड़ने के बाद अस्पताल में भर्ती-सूत्रों के अनुसार, पूर्व उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ बुधवार को सुबह की सैर के दौरान बेहोश हो गए थे। कुछ मिनटों तक अचेत रहने के बाद उन्हें उनके सुरक्षाकर्मियों द्वारा घर ले जाया गया। इसके बाद, एक चिकित्सा टीम और एम्स के डॉक्टर संदीप सेठ ने उन्हें प्राथमिक उपचार दिया। हालांकि, उनकी स्वास्थ्य स्थिति को देखते हुए उन्हें एम्बुलेंस द्वारा एम्स ले जाया गया।

कार्डियो-न्यूरो सेंटर में भर्ती, विशेषज्ञ डॉक्टरों की निगरानी में-75 वर्षीय पूर्व उपराष्ट्रपति को एम्स के कार्डियो-न्यूरो सेंटर में भर्ती किया गया है। वे वर्तमान में हृदय रोग विभाग के विशेषज्ञों की देखरेख में हैं, जहां उनकी चिकित्सा मूल्यांकन और उपचार जारी है।

पूर्व उपराष्ट्रपति के रूप में कार्यकाल-जगदीप धनखड़ ने अगस्त 2022 से जुलाई 2025 तक भारत के 14वें उपराष्ट्रपति के रूप में कार्य किया। उन्होंने स्वास्थ्य कारणों का हवाला देते हुए जुलाई 2025 में अपने पद से इस्तीफा दे दिया था।

होटल कारोबारी की पत्नी बरखा गिरफ्तार

रायपुर। होटल कारोबारी दीपक टंडन और उसकी पत्नी बरखा टंडन की मुश्किलें लगातार बढ़ती जा रही है. ब्लैकमेलिंग और धोखाधड़ी मामले में रायपुर की तेलीबांधा पुलिस ने पूछताछ के बाद बरखा टंडन को विधिवत गिरफ्तार कर लिया है. इधर सक्ती जिले में कोयला कारोबारी से ठगी मामले में दीपक टंडन के खिलाफ एक और एफआईआर दर्ज हुई है.दरअसल, दोनों आरोपियों के खिलाफ एकाएक धोखाधड़ी समेत कई अपराधिक मामले सामने आए हैं. रायपुर में कुल 3 मामलों में एफआईआर दर्ज की गई है. इसी संबंध में तेलीबांधा पुलिस बरखा टंडन को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही थी. साक्ष्यों से पुष्टि के बाद उसे गिरफ्तार कर लिया गया है.



नोएडा वालों के लिए बड़ी खबर

ग्रेटर नोएडा मेट्रो के विस्तार को कैबिनेट की मंजूरी, 2390 करोड़ होंगे खर्च

नोएडा (ए)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने नोएडा मेट्रो रेल परियोजना के एक्वा लाइन कॉरिडोर के विस्तार को मंजूरी दी है। यह विस्तार नोएडा सेक्टर-51 से ग्रेटर नोएडा सेक्टर-04 तक होगा। इसकी लंबाई 8.449 किलोमीटर होगी और इसमें पांच एलिवेटेड स्टेशन बनेंगे। इस कॉरिडोर के चालू होने पर नोएडा और ग्रेटर नोएडा शहर में 71.878 किलोमीटर का सक्रिय मेट्रो रेल नेटवर्क हो जाएगा।

नोएडा सेक्टर-51 से ग्रेटर नोएडा सेक्टर-4 मेट्रो तक जुड़ेगा-केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया कि इस परियोजना पर 2390 करोड़ रुपये की लागत आएगी।



यह विस्तार शहर के बुनियादी ढांचे के विकास में महत्वपूर्ण प्रगति है। नोएडा के सेक्टर 51 से ग्रेटर नोएडा के सेक्टर 4 तक यह लाइन बढ़ेगी। इस क्षेत्र में कई आईटी कंपनियां और ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर स्थापित हैं। इन सभी को बेहतर कनेक्टिविटी का लाभ मिलेगा। एक्वा लाइन का विस्तार दिल्ली क्षेत्र के हवाई अड्डों तक बेहतर पहुंच प्रदान करेगा। इस स्थल पर एक विशाल मल्टीमॉडल परिवहन हब भी विकसित किया जा रहा है। इसमें एक मेगा रेलवे टर्मिनल भी शामिल

द बोनस मार्केट अपडेट

शेयर बाजार में बंपर उछाल, सेंसेक्स 773 अंक चढ़ा

नई दिल्ली (ए)। भारतीय शेयर बाजार ने बुधवार को अपनी तेजी जारी रखी। सेंसेक्स और निफ्टी दोनों प्रमुख सूचकांक एक फीसदी से अधिक उछले।



विदेशी संस्थागत निवेश और अन्य सकारात्मक कारणों से बाजार में यह वृद्धि हुई। सेंसेक्स 772.75 अंक (0.95 फीसदी) बढ़कर 81,879.40 पर बंद हुआ। निफ्टी 210.40 अंक (0.84 फीसदी) की वृद्धि के साथ 25,255.05 पर पहुंचा। एमएंडएम के शेयरों में पांच फीसदी और इंडिगो के शेयरों में चार फीसदी का उछाल देखा गया। अधिकांश क्षेत्रीय सूचकांकों में तेजी रही, जो बाजार के व्यापक मजबूती का संकेत है।

फार्मा और हेल्थकेयर सूचकांक दबाव में रहे। आईटी सूचकांक लगभग सपाट रहा, जबकि आरईआईटी में मामूली गिरावट दर्ज की गई। बाजार में आज की तेजी के पीछे चार प्रमुख कारक बताए गए हैं। इन कारणों से निवेशकों को करीब 6 लाख करोड़ रुपये का लाभ हुआ। विदेशी संस्थागत निवेशकों का प्रवाह एक बड़ा कारण रहा। अन्य सकारात्मक संकेतकों ने भी बाजार को ऊपर धकेला। यह लगातार दूसरे दिन की तेजी है।

दैनिक
विश्व परिवार
छत्तीसगढ़
रायपुर, गुरूवार 12 नवम्बर 2026
www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

जनजातीय लोक नृत्य और लोक कलाओं की प्रस्तुतियों से जीवंत हुई समृद्ध सांस्कृतिक विरासत



रायपुर (विश्व परिवार)। जनजातीय समाज की समृद्ध लोक संस्कृति, परंपरा और गौरवशाली विरासत को मंच प्रदान करने के उद्देश्य से आज रायगढ़ के संत पूज्य श्री प्रियदर्शी राम ऑडिटोरियम, पंजरी प्लांट में जिला स्तरीय उत्तर छत्तीसगढ़ क्षेत्र जनजातीय लोक नृत्य महोत्सव एवं शहीद वीर नारायण सिंह स्मृति आदिवासी लोक कला महोत्सव-2026 का भव्य आयोजन किया गया। भारत सरकार के जनजातीय कार्य मंत्रालय के निर्देशानुसार जनजातीय गौरव दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित इस महोत्सव में जिले के सातों विकासखंडों से पहुंचे कलाकारों ने पारंपरिक लोक नृत्य एवं लोक कलाओं की मनमोहक प्रस्तुतियों से जनजातीय संस्कृति की विविधता और समृद्धि को प्रदर्शित किया। कार्यक्रम का शुभारंभ छत्तीसगढ़ महतारी, भगवान बिरसा मुंडा, शहीद वीर नारायण सिंह, वीरांगना रानी दुर्गावती सहित अन्य महापुरुषों के छायाचित्रों पर दीप प्रज्ज्वलन एवं माल्यार्पण के साथ हुआ। इसके पश्चात राष्ट्रगीत एवं राज्यगीत का सामूहिक गायन किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित सर्व आदिवासी समाज के सचिव डॉ. बाल किशोर भगत ने अपने उद्बोधन में कहा कि जनजातीय लोक नृत्य महोत्सव एवं शहीद वीर नारायण सिंह स्मृति आदिवासी लोक कला महोत्सव का आयोजन समाज के लिए अत्यंत गौरव और महत्व का विषय है। हमारी संस्कृति, संस्कार, नृत्य, बोली और भाषा अत्यंत समृद्ध हैं। इन परंपराओं को संरक्षित करना और नई पीढ़ी तक पहुंचाना हम सभी की जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि आधुनिकता के दौर में आगे बढ़ना और उच्च शिक्षा प्राप्त कर अच्छे पदों पर पहुंचना जरूरी है, लेकिन इसके साथ अपनी जड़ों, संस्कृति और परंपराओं को कभी नहीं भूलना चाहिए। उन्होंने कहा कि आदिवासी समाज की असली पहचान उसकी संस्कृति, संस्कार, लोकगीत और लोकनृत्य हैं। लोकनृत्य केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि समाज की समृद्धि, एकजुटता और सांस्कृतिक पहचान को प्रदर्शित करने का सशक्त माध्यम है। छत्तीसगढ़ की 42 जनजातियों में अलग-अलग विशेषताएं और कलात्मक प्रतिभाएं हैं। आवश्यकता है कि सभी जनजातियां अपनी पारंपरिक कलाओं का प्रदर्शन करें, ताकि हमारी सांस्कृतिक विरासत और अधिक समृद्ध हो। उन्होंने कलाकारों को शुभकामनाएं देते हुए भविष्य में इस आयोजन को और अधिक भव्य स्वरूप देने का आह्वान किया।

नगर निगम रायगढ़ के सभापति श्री डिग्री लाल साहू ने जनजातीय समाज को जय जोहार करते हुए कहा कि जनजातीय समाज अपनी विशिष्ट लोक संस्कृति और परंपराओं के लिए जाना जाता है। किसी भी सांस्कृतिक आयोजन में जनजातीय कलाकारों की भागीदारी कार्यक्रम की शोभा बढ़ाती है। उन्होंने समाज में संगठन और एकजुटता बनाए रखने पर जोर देते हुए कहा कि एकजुटता से ही समाज की विकास यात्रा आगे बढ़ती है। उन्होंने राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू का उल्लेख करते हुए कहा कि जनजातीय समाज से अनेक व्यक्तित्व देश के महत्वपूर्ण पदों पर पहुंचे हैं। आगामी 15 नवंबर को पूरे देश के साथ छत्तीसगढ़ में भी जनजातीय गौरव दिवस भव्य रूप से मनाया जाएगा।

उत्तर छत्तीसगढ़ क्षेत्र जनजातीय लोक नृत्य महोत्सव के अंतर्गत जिले के सभी सातों विकासखंडों के कर्मा नृत्य दलों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। प्रत्येक दल को अपनी कला एवं सांस्कृतिक परंपरा के प्रदर्शन के लिए 15 मिनट का समय दिया गया। कलाकारों ने पारंपरिक वेशभूषा, लोक वाद्ययंत्रों और लयबद्ध नृत्य के माध्यम से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। जिसमें विकासखण्ड लैलूंगा के कर्मा लोक नृत्य दल मोहनीपुरी चंवरपुर ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। वहीं घरघोड़ा के लोक नृत्य कर्मा पार्टी आमापाली (बहिरकेला) ने द्वितीय, धरमजयगढ़ के भंडारीपारा कर्मा पार्टी सिथरा ने तृतीय एवं विकासखण्ड तमनार के जय मां कर्मा सेनी कर्मा नृत्य मंडली ग्राम मौहापाली ने चतुर्थ स्थान प्राप्त हुआ। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले दल को 50 हजार रुपये, द्वितीय को 25 हजार रुपये, तृतीय को 15 हजार रुपये तथा चतुर्थ स्थान प्राप्त करने वाले दल को 10 हजार रुपये का पुरस्कार प्रदान किया गया।

इसी प्रकार शहीद वीर नारायण सिंह स्मृति आदिवासी लोक कला महोत्सव के अंतर्गत आयोजित जिला स्तरीय लोक कला नृत्य प्रतियोगिता में भी सातों विकासखंडों की टीमों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। जिसमें घरघोड़ा विकासखण्ड के आदि शक्ति कर्मा पार्टी कोटरीमाल ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। वहीं लैलूंगा के कर्मा आदिवासी लोक नृत्य दल खेडआमा ने द्वितीय, धरमजयगढ़ के मां लक्ष्मी कर्मा पार्टी भुण्डीबहरी ने तृतीय, खरसिया के गेढ़ी नृत्य कर्मा पार्टी छिरपानी ने चतुर्थ एवं विकासखण्ड रायगढ़ के बसंत विश्वकर्मा दल डोंगीतराई पांचवे स्थान पर रहे। इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले दल को 21 हजार रुपये, द्वितीय पुरस्कार 11 हजार रुपये तथा तृतीय पुरस्कार 5 हजार 100 रुपये प्रदान किया गया। दोनों प्रतियोगिताओं के माध्यम से स्थानीय कलाकारों को अपनी पारंपरिक कला और प्रतिभा प्रदर्शित करने का महत्वपूर्ण अवसर मिला।महोत्सव के दौरान जनजातीय समाज के प्रतिभावान विद्यार्थियों को मंचासीन अतिथियों द्वारा प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया।

एम्स रायपुर में स्त्री रोग विशेषज्ञों को आधुनिक लेप्रोस्कोपिक सर्जरी का प्रशिक्षण



तीन दिवसीय कौशल विकास कार्यक्रम संपन्न

रायपुर (विश्व परिवार)। एम्स रायपुर के प्रसूति एवं स्त्री रोग विभाग द्वारा एम्स एसोसिएशन ऑफ गायनेकोलॉजिकलएंडोस्कोपी (द्वत्रश्च) के सहयोग से 1 से 3 नवंबर, 2026 तक स्त्री रोग संबंधी लेप्रोस्कोपिक सर्जरी पर तीन दिवसीय बेसिक स्किल्स कोर्स का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य स्त्री रोग विशेषज्ञों को आधुनिक सर्जिकल तकनीकों में दक्ष बनाना तथा उनके व्यावहारिक कौशल को सुदृढ़ करना था।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ के विभिन्न मेडिकलकॉलेजों, जिला अस्पतालों, नर्सिंग होम एवं अन्य बड़े अस्पतालों के स्त्री रोग विशेषज्ञों ने भाग लिया। विभिन्न एम्स संस्थानों के विशेषज्ञ सर्जनों ने लाइवसर्जिकल प्रदर्शन एवं ऑपरेशनथिएटर में व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया। इस दौरान 10 से अधिक लेप्रोस्कोपिक प्रक्रियाओं का प्रशिक्षण दिया गया, जिनमें मायोमेक्टॉमी, डीपइनफिल्ट्रेटिंगएंडोमेट्रियोसिस (ष्ठद्बश्च) तथा प्रजनन क्षमता संरक्षित रखने वाली सर्जरी शामिल थीं।

कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण 'लैप्टिट्यूड' (श्रद्धद्बद्धद्ब्रष्ठश्च) लेप्रोस्कोपिकसिम्युलेटर रहा। एम्स रायपुर के कार्यपालक निदेशक लेफ्टिनेंट जनरल अशोक जिंदल (सेवानिवृत्त) ने सिमुलेशनलैब का उद्घाटन किया तथा युवा स्त्री रोग विशेषज्ञों के कौशल विकास में इसकी भूमिका की सराहना की।

आयोजन में ऑर्गनाइजिंगचेयरपर्सन एवं द्वत्रश्चके उपाध्यक्ष डॉ.नीलजकुमार बगड़े, ऑर्गनाइजिंग सेक्रेटरी प्रो. डॉ. विनीता सिंह, द्वत्रश्चअध्यक्ष डॉ. शशांक शेखर, सचिव डॉ. सौभाग्य जेना तथा संयुक्त सचिव डॉ. पृथ्वीराज सेठ की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

द्वत्रश्च, 15 एम्स संस्थानों के लगभग 150 सदस्यों वाला अखिल-एम्स संगठन है, जो सर्जिकल कौशल विकास, ज्ञान के आदान-प्रदान एवं युवा स्त्री रोग विशेषज्ञों के मार्गदर्शन के लिए प्रतिबद्ध है।

कार्यपालक निदेशक लेफ्टिनेंट जनरल अशोक जिंदल (सेवानिवृत्त) ने सफल आयोजन के लिए विभाग एवं आयोजन समिति को बधाई देते हुए कहा कि यह कार्यक्रम आधुनिक सर्जिकल प्रशिक्षण, सिमुलेशन आधारित शिक्षा तथा एम्स संस्थानों के बीच अकादमिक सहयोग को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल साबित हुआ।

महापौर एवं आयुक्त संयुक्त निरीक्षण कर साफ सफाई व विद्युत व्यवस्था दुरूस्त करने के दिये निर्देश

मोहारा मेला स्थल निरीक्षण कर महापौर ने आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित करने कहा



राजनांदगांव। छठ पर्व एवं मोहारा मेला को ध्यान में रखते हुये महापौर श्री मधुसूदन यादव व निगम आयुक्त श्री जी.आर. मरकाम ने शहर में साफ सफाई व्यवस्था दुरूस्त करने, के साथ साथ मोती तालाब व चिखली तालाब के अलावा अन्य तालाबों के आस पास साफ सफाई करने, दवा का छिडकाव करने, विद्युत व्यवस्था दुरूस्त करने के निर्देश दिये। वही मोहारा मेला स्थल निरीक्षण के दौरान महापौर ने मेला स्थल में सभी आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित करने कहा। निरीक्षण के दौरान शिक्षा विभाग के प्रभारी सदस्य श्री आलोक श्रोती, पार्षद श्री चन्द्रकृत साहू उपस्थित थे।

प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी छठ पर्व के अवसर पर मोती तालाब एवं चिखली तालाब में तीन दिनो तक पूजा कर त्योहार मनाया जावेगा। छठ पर्व के पूर्व दोनो तालाबो में आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित करने महापौर श्री यादव एवं आयुक्त श्री मरकाम ने आज मोती तालाब का निरीक्षण किया। महापौर श्री यादव ने स्वास्थ्य एवं तकनीकि अधिकारी से कहा कि तालाब के किनारे सम्पूर्ण घाट की साफ सफाई करे, किनारे लगे कटिली झाडिया काट डस्टबिन रखे एवं दवाई का छिडकाव कर चुना लाईन डाले। उन्होंने आस पास पर्याप्त विद्युत व्यवस्था करने के अलावा तालाब मार्ग को दुरूस्त करने कहा। साथ ही तालाब में किनारे पूजन सामाग्री विसर्जित करने जाली लगावे ताकि तालाब में फूल पान न फैले। आयुक्त ने कहा कि सभी कर्मचारी त्योहार तक नियमित रूप से मोती तालाब एवं चिखली तालाब के किनारे सफाई करना सुनिश्चित करेगे। तालाब के पास लगे लाईटे भी प्रतिदिन जले इसका भी विशेष ध्यान रख जाए। इसके अलावा त्योहार में शहर में भी साफ सफाई व्यवस्था सुनिश्चित किया जाए।

निरीक्षण की कडी में मोहारा मेला स्थल का भी जायजा लिया गया। इस अवसर पर महापौर श्री यादव ने मेला स्थल में सभी आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि नदी किनारे पचरी का गाद निकाल सफाई करे, साथ ही सम्पूर्ण मेला स्थल की सफाई कर कटीली झाडिया काट मैदान समतल करने निर्देशित किए। इसी प्रकार नदी के मोहारा एंव हल्दी घाट की सफाई कर पुन्नी स्नान के दौरान महिलाओ के लिए अस्थाई चेजिंग रूम बनाने कहा। उन्होंने शौचालय की आवश्यक मरम्मत कर साफ सफाई करने तथा विद्युत व पेयजल तथा अन्य आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित करने कहा।

आयुक्त श्री मरकाम ने कहा कि पानी, बिजली, सफाई की समुचित व्यवस्था करने के साथ साथ मेला स्थल में नदी की ओर आवश्यक सुरक्षात्मक व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। इसके अलावा दुकान लगाने वालो के लिए पसरा लगाने ले आउट प्लान करे, जिससे सभी पसरा व्यवस्थित तरीके से लग सके। सुगम आवागमन के साथ साथ आपातकालीन वाहन के आने जाने में परेशानी न हो इसका विशेष ध्यान रखा जाए। निरीक्षण के दौरान कार्यपालन अभियंता (संविदा) श्री यू.के.रामटेके, प्र.स्वास्थ्य अधिकारी श्री राजेश मिश्रा, प्र.उप अभियंता श्री चिरांग मेश्राम, स्वच्छता निरीक्षक श्री

गोवर्धन पूजा पर महापौर ने कांजी हाउस में गौमाता की पूजा कर खिलाई खिचड़ी

शहरवासियों की सुख-समृद्धि और खुशहाली की कामना की

मंदिरो में पूजा-अर्चना कर अन्नकुट प्रसादी का किए वितरण



राजनांदगांव। महापौर श्री मधुसूदन यादव ने गोवर्धन पूजा पर्व के पावन अवसर पर कन्हारपुरी के कांजी हाउस में विधि-विधान से गोवंश की पूजा-अर्चना कर गौमाता को खिचड़ी खिलाई। साथ ही शहर के मंदिरो में दर्शन कर भरकापारा स्थित प्राचीन मोतीनाथ मंदिर एवं महावीर चैक स्थित दक्षिण मुखी हनुमान मंदिर में पूजा अर्चना कर उन्होंने समस्त क्षेत्रवासियों के जीवन में सुख, समृद्धि, शांति और खुशहाली बनी रहने की कामना करते हुए दीपावली एवं गोवर्धन पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर उन्होने मंदिरों में अन्नकुट प्रसादी वितरण किया। गौमाता पूजा के दौरान निगम आयुक्त श्री जी.आर. मरकाम, पुनर्वास तथा नियोजन विभाग के प्रभारी सदस्य श्री डिलेश्वर साहू, पार्षदगण श्रीमती मोहनी युवराज भारती,श्रीमती रीना ओमप्रकाश सिन्हा एवं श्रीमती चन्द्रिका हिंसाराम साहू विशेष रूप से उपस्थित रहे।

इस पावन अवसर पर महापौर श्री यादव ने कहा कि गोवर्धन पूजा छत्तीसगढ का सबसे बड़ा पारंपरिक त्योहार है। आज के दिन गौमाता की पूजा का बहुत महत्व है, गौमाता की सेवा और संरक्षण हमारी धार्मिक आस्था के साथ-साथ सामाजिक और सांस्कृतिक परंपरा का भी अभिन्न अंग है। गोवर्धन पूजा हमें प्रकृति, पशुधन और अन्न के महत्व को समझने तथा उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने की प्रेरणा देती है। मंदिरो में पूजा अर्चना के दौरान दीपावली पर्व की बधाई देते हुए उन्होंने कहा कि शहर के लगभग सभी मंदिरो में आज अन्नकुट का भोग लगाकर प्रसादी वितरण किया जाता है। जिससे शहर में एक अलग ही धार्मिक भावना देखने को मिलती है।

आयुक्त श्री मरकाम ने दीपावली की शुभकामनाए देते हुए कहा कि कन्हापुरी काजी हाउस में हर साल उत्साह के साथ गोवर्धन पूजा पर्व मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि कांजी हाउस का जीर्णोद्धार कर उसे मूर्तरूप दिया जायेगा। इसके अलावा निगम द्वारा संचालित सभी काजी हाउसो में गौमाताओ के लिए सभी आवश्यक व्यवस्था का संचालन रूचारू रूप से करने का प्रयास रहता है। अन्नकुट प्रसादी अवसर पर ग्रामवासी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

कार्यालय सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मंडल
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-03, सेजबहार, रायपुर
(छ.ग.), फोन नं.-0771-2991574
email Id- eocghbzone03@gmail.com

आम-सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा कॉलोनी बोरियाकला, जिला- रायपुर में निर्मित सामान्य आवास योजनांतर्गत भवन क्रमांक- रोजवुड 17, डॉ मनीष श्रीवास्तव पिता श्री जे.एल. श्रीवास्तव के नाम पर स्ववित्तीय आधार पर आबंटित किया गया है। आबंटी द्वारा उक्त भवन का पूर्ण राशि जमा कर अपने पक्ष में दिनांक 04.06.2013 को लीजडीड पंजीकृत कराने के उपरांत दिनांक 29.04.2014 को हस्तांतरण विलेख (फीहोल्ड) करा लिया गया है। आबंटी डॉ मनीष श्रीवास्तव पिता श्री जे.एल. श्रीवास्तव पता-522, ब्लॉक नं. 22, हॉउसिंगबोर्ड कॉलोनी, खम्हारडीह, कचना रोड, रायपुर तहसील व जिला-रायपुर (छ.ग.) द्वारा हस्तांतरण विलेख उपरांत उक्त भवन को श्रीमति तसनीम अख्तर पिता स्व. मोहम्मद अख्तर कुरैशी पता 443, वृंदावन कॉलोनी संतोषी वार्ड-27 जगदलपुर, जिला-बस्तर (छ.ग.) को दिनांक 25.03.2022 विक्रय कर दिया गया है। आबंटी श्रीमति तसनीम अख्तर पिता स्व. मोहम्मद अख्तर कुरैशी का मृत्यु दिनांक 28.05.2023 हो गया। मृत्यु उपरांत उक्त भवन को आबंटी कु. राना शेख पिता शेख नवाज मोहम्मद पता-443, वृंदावन कॉलोनी संतोषी वार्ड-27 जगदलपुर, जिला-बस्तर (छ.ग.), द्वारा उक्त भवन को अपने नाम से नाम दर्ज करने आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया।

अतः किसी भी व्यक्ति, शासकीय/अर्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक अथवा वित्तीय संस्था इत्यादि को उक्त भवन का प्री-होल्ड पश्चात् मृत्यु उपरांत कु. राना शेख पिता शेख नवाज मोहम्मद के नाम दर्ज किये जाने में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में स्वयं उपस्थित होकर लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अन्दर आपत्ति प्रस्तुत करें, अन्यथा नियत समयावधि पश्चात् आपत्ति मान्य नहीं की जावेगी।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण
एवं अधोसंरचना विकास मण्डल,
प्रक्षेत्र-03, सेजबहार रायपुर (छ.ग.)

पहांदा में कृषक जागरूकता कार्यक्रम सम्पन्न



रायपुर (विश्व परिवार)। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषदद्धराष्ट्रीय जैविक स्ट्रेस प्रबंधन संस्थान रायपुर द्वारा संचालित खेत बचाओ अभियान 2026 के अंतर्गत ग्राम पंचायत पहांदा, विकासखंड बेरला, जिला बेमेतरा में कृषक जागरूकता एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में कुल 30 किसानों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों को आधुनिक, वैज्ञानिक एवं टिकाऊ कृषि पद्धतियों के प्रति जागरूक करना तथा कृषि उत्पादन में स्थिरता, मृदा स्वास्थ्य एवं प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण को बढ़ावा देना था।इस अवसर पर संस्थान की ओर से डॉ. श्रावणी सान्याल एवं डॉ. श्रीलता पोलेपोंगु तथा कृषि विज्ञान केंद्र की ओर से डॉ. जितेंद्र कुमार जोशी एवं डॉ. चंद्रशेखर खरे ने किसानों के साथ संवाद किया।

विशेषज्ञों द्वारा तकनीकी व्याख्यानों एवं किसान-वैज्ञानिक संवाद के माध्यम से जैविक एवं प्राकृतिक खेती, संतुलित उर्वरक उपयोग तथा आधुनिक एवं टिकाऊ कृषि पद्धतियों की विस्तृत जानकारी दी गई। किसानों को रासायनिक उर्वरकों के संतुलित एवं विवेकपूर्ण उपयोग, मृदा स्वास्थ्य बनाए रखने तथा वैज्ञानिक कृषि तकनीकों को अपनाकर खेती की लागत कम करने और उत्पादन की गुणवत्ता बढ़ाने के संबंध में मार्गदर्शन प्रदान किया गया।कार्यक्रम के दौरान किसानों ने वैज्ञानिकों से कृषि संबंधी विभिन्न विषयों पर चर्चा की तथा अपनी समस्याओं एवं अनुभवों को साझा किया। वैज्ञानिकों ने किसानों की जिज्ञासाओं का समाधान करते हुए स्थानीय कृषि परिस्थितियों के अनुरूप उपयोगी सुझाव दिए।

खेत बचाओ अभियान 2026 के माध्यम से संस्थान एवं कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा किसानों तक वैज्ञानिक तकनीकों का प्रसार कर टिकाऊ, लाभकारी एवं पर्यावरण अनुकूल कृषि को प्रोत्साहित करने की दिशा में निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं।

कार्यालय सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01, सिरपुर भवन,
व्यवसायिक परिसर कबीर नगर, रायपुर
email Id- eocghbzone1@gmail.com

आम-सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि हितग्राही श्रीमती पुष्पा चन्द्राकर पति श्री राजेश चन्द्राकर, को भवन / भूखण्ड क्र.- एम.आई.जी.-192, कॉलोनी टाटीबंध, रायपुर में छत्तीसगढ़ गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मण्डल, द्वारा आबंटित हैं, हितग्राही द्वारा आवासीय भूखण्ड/भवन को फ्री-होल्ड अधिकार में संपरिवर्तन हेतु निर्धारित प्रारूप में आवेदन प्रस्तुत किया गया हैं। प्रस्तुत दस्तावेज के आधार पर फ्री-होल्ड अधिकार में संपरिवर्तन किया जाना है, इस संबंध में यदि किसी व्यक्ति, शासकीय/अर्द्धशासकीय संस्था को कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन की तिथि से 15 दिवस के भीतर मय दस्तावेज सहित, अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। निर्धारित अवधि के पश्चात् कोई भी आपत्ति मान्य नहीं की जावेगी।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण एवं
अधोसंरचना विकास मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01
कबीर नगर, रायपुर

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-5)
ईदगाहभाठा,नवीन पानी टंकी परिसर, रायपुर
Email ID - rmczone5@gmail.com

पत्र क्रं./36874/न.पा.नि./जोन क्रं.-5/2026
रायपुर दिनांक : 11-11-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 36874
वार्ड का नाम- 67- भक्तमाता कर्मा वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 67 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- RPR567J00174 जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती RAMNARAYAN AGARWAL पिता/पति, श्री/श्रीमती .... के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती MUKESH AGRAWAL 2 RAKESH KUMAR AGRAWAL पिता/पति, श्री/श्रीमती LT. RAMNARAYAN AGRAWAL ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ शपथ पत्र/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/ संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/ आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करे
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 5
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /36826/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2026
रायपुर, दिनांक 07-11-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 36826
वार्ड का नाम-21- शहीद भगत सिंह वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 21 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR813G00123 जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती RASHMITA JENA पिता/पति, श्री/श्रीमती PRASHANT KUMAR JENA के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती SMT SUMAN PANDEY पिता/पति, श्री/श्रीमती UMESH KUMAR PANDEY ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ पंजीकृत विक्रय विलेख / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्रीमती राजेश्वरी पटेल
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(8)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /36828/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2026
रायपुर, दिनांक 07-11-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 36828
वार्ड का नाम-21- शहीद भगत सिंह वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 21 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR813B01001 जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती KANCHAN SOMKUVANAR पिता/पति, श्री/श्रीमती SURESH SOMKUVAR के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती SUSHIL SOMKUWAR पिता/पति, श्री/श्रीमती SURESH SOMKUWAR ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ पंजीकृत विक्रय विलेख / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्रीमती राजेश्वरी पटेल
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(8)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /36824/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2026
रायपुर, दिनांक 07-11-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 36824
वार्ड का नाम-21- शहीद भगत सिंह वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 21 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR814A0157A जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती ASHISH AGRAWAL पिता/पति, श्री/श्रीमती PAVAN KUMAR AGRAWA के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती SEEMA पिता/पति, श्री/श्रीमती MUKESH ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ पंजीकृत विक्रय विलेख / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्रीमती राजेश्वरी पटेल
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(8)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

प्रादेशिकी

रायपुर, गुरूवार 12 नवंबर 2026

एनएमडीसी स्टील प्लांट और ठेकेदारों की लापरवाही की भेंट चढ़ा देवड़ा निवासी मंगल साय, आदिवासी युवक की मौत की हो निष्पक्ष जांच – सुशील मौर्य

नगरनार स्टील प्लांट में लगातार हो रही आदिवासी युवकों की मौत की घटनाएं चिंताजनक, आखिर कब जागेगा एनएमडीसी प्रबंधन? सुरक्षा मानकों और श्रमिकों की जान की जिम्मेदारी तय हो

जगदलपुर। नगरनार स्थित एनएमडीसी स्टील प्लांट के एसएमएस (स्क्रू) विभाग में हुए दर्दनाक औद्योगिक हादसे में वहां कार्यरत ऑपरेटर मंगल साय की मौके पर ही मौत हो जाने की घटना ने एक बार फिर प्लांट की सुरक्षा व्यवस्था और श्रमिकों की कार्य परिस्थितियों पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। जानकारी के अनुसार, पिघले हुए लोहे की चपेट में आने से यह हादसा हुआ। मृतक मंगल साय की उम्र लगभग 30 से 32 वर्ष बताई जा रही है और वह छोटे देवड़ा का निवासी था। एक युवा आदिवासी श्रमिक की इस तरह असमय मौत से उसके परिवार पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है।

इस घटना पर गहरा दुख व्यक्त करते हुए बस्तर जिला कांग्रेस कमेटी (शहर) के अध्यक्ष सुशील मौर्य ने जारी प्रेस विज्ञप्ति में एनएमडीसी प्रबंधन और प्लांट में कार्यरत ठेकेदारों की सुरक्षा व्यवस्था पर गंभीर सवाल उठाए हैं। उन्होंने कहा कि नगरनार स्टील प्लांट में लगातार श्रमिकों, विशेषकर आदिवासी युवकों की मौत की घटनाएं सामने आना बेहद चिंताजनक है। आखिर कब तक बस्तर के आदिवासी युवा अपनी जान जोखिम में डालकर काम करते रहेंगे और उनके परिवारों को इस तरह अपूरणीय क्षति उठानी पड़ेगी? सुशील मौर्य ने कहा कि एनएमडीसी जैसे बड़े सार्वजनिक उपक्रम से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अपने प्रत्येक कर्मचारी और श्रमिक की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देगा। लेकिन प्लांट में लगातार हो रही दुर्घटनाएं यह सवाल खड़ा करती हैं कि क्या श्रमिकों की सुरक्षा के लिए निर्धारित मानकों का वास्तव में पालन किया जा रहा है? क्या ठेका श्रमिकों को पर्याप्त सुरक्षा उपकरण, प्रशिक्षण और सुरक्षित कार्य वातावरण उपलब्ध कराया जा रहा है? यदि सुरक्षा के पर्याप्त इंतजाम हैं तो फिर बार-बार इस तरह के जानलेवा हादसे क्यों हो रहे हैं?

उन्होंने कहा कि बस्तर के आदिवासी युवा रोजगार की तलाश में अपनी मेहनत और श्रम से औद्योगिक इकाइयों को आगे बढ़ाने में योगदान दे रहे हैं। लेकिन यदि उन्हें कार्यस्थल पर ही सुरक्षित जीवन का भरोसा नहीं मिल पा रहा है, तो यह



बेहद गंभीर विषय है। एनएमडीसी प्रबंधन को यह समझना होगा कि प्लांट में काम करने वाला प्रत्येक श्रमिक किसी परिवार का बेटा, भाई और सहारा है। उसकी जिंदगी की कीमत किसी भी उत्पादन लक्ष्य, ठेकेदारी व्यवस्था या आर्थिक लाभ से कम नहीं हो सकती।

सुशील मौर्य ने आरोप लगाया कि प्लांट में ठेका श्रमिकों की सुरक्षा को लेकर गंभीर लापरवाही की आशंकाएं लगातार सामने आ रही हैं। ठेकेदारों की जिम्मेदारी केवल श्रमिकों से काम करवाने तक सीमित नहीं हो सकती, बल्कि उन्हें सुरक्षित कार्यस्थल, आवश्यक सुरक्षा उपकरण, तकनीकी प्रशिक्षण और दुर्घटनाओं से बचाव के सभी उपाय उपलब्ध कराना भी उनकी जिम्मेदारी है। वहीं एनएमडीसी प्रबंधन की जवाबदेही है कि वह ठेकेदारों द्वारा निर्धारित सुरक्षा नियमों का पालन सुनिश्चित कराए। यदि किसी स्तर पर लापरवाही हुई है तो संबंधित जिम्मेदार अधिकारियों और ठेकेदारों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई होनी चाहिए।

उन्होंने मांग की कि मंगल साय की मौत के मामले में केवल औपचारिक जांच कर खानापूर्ति नहीं की जाए, बल्कि पूरे घटनाक्रम की निष्पक्ष और उच्चस्तरीय जांच कराई जाए। जांच में यह स्पष्ट किया जाए कि हादसा किन परिस्थितियों में हुआ, कार्यस्थल पर सुरक्षा के क्या इंतजाम थे, क्या श्रमिक को आवश्यक सुरक्षा उपकरण उपलब्ध कराए गए थे, दुर्घटना के समय कौन-कौन अधिकारी और जिम्मेदार कर्मचारी ड्यूटी पर थे तथा सुरक्षा प्रोटोकॉल का पालन किया जा रहा था या नहीं। सुशील मौर्य ने कहा कि इस पूरे मामले में मृतक के परिजनों को न्याय मिलना चाहिए। परिवार को उचित आर्थिक मुआवजा, परिवार के एक पात्र सदस्य को योग्यता के अनुसार रोजगार तथा अन्य सभी वैधानिक सहायता उपलब्ध कराई जाए। साथ ही दुर्घटना के लिए जिम्मेदार लोगों की जवाबदेही तय कर उनके विरुद्ध नियमानुसार कठोर कार्रवाई की जाए। उन्होंने यह भी कहा कि नगरनार स्टील प्लांट में पूर्व में हुई औद्योगिक दुर्घटनाओं और उनमें श्रमिकों की जान जाने के मामलों की भी समीक्षा होनी चाहिए। यह पता लगाया जाना आवश्यक है कि पूर्व की घटनाओं के बाद सुरक्षा व्यवस्था में क्या सुधार किए गए और उन सुधारों का कितना पालन हो रहा है। यदि पहले हुए हादसों से प्रबंधन ने कोई सबक नहीं लिया है, तो यह श्रमिकों की सुरक्षा के प्रति गंभीर लापरवाही का विषय है। सुशील मौर्य ने कहा कि बस्तर के आदिवासी युवाओं ने अपने क्षेत्र के विकास और औद्योगिक प्रगति में हमेशा महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनकी मेहनत और श्रम से उद्योगों को लाभ मिल रहा है, लेकिन बदले में उन्हें सुरक्षित कार्यस्थल और सम्मानजनक रोजगार मिलना भी उतना ही जरूरी है। आदिवासी युवाओं की जिंदगी को सस्ती मजदूरी और ठेकेदारी व्यवस्था के भरोसे नहीं छोड़ा जा सकता। अंत में सुशील मौर्य ने एनएमडीसी प्रबंधन से मांग की कि मंगल साय की मौत को एक सामान्य औद्योगिक दुर्घटना मानकर नजरअंदाज न किया जाए। इस मामले में पारदर्शी जांच, जिम्मेदारों पर कार्रवाई, पीड़ित परिवार को उचित मुआवजा और रोजगार की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। साथ ही नगरनार स्टील प्लांट में कार्यरत सभी स्थायी एवं ठेका श्रमिकों की सुरक्षा के लिए ठोस कदम उठाए जाएं,

संक्षिप्त समाचार

इंडसइंड बैंक ने जेपी मॉर्गन पेमेंट्स के साथ साझेदारी से आउटवर्ड रेमिटेंस सेवाओं का किया विस्तार, अब 123 मुद्राओं में भेज सकेंगे पैसे

मुंबई: इंडसइंड बैंक और जेपी मॉर्गन पेमेंट्स ने बैंक के ग्राहकों के लिए आउटवर्ड रेमिटेंस (विदेशों में धन भेजने) की सुविधा को बेहतर बनाने के लिए साझेदारी की है। इसके तहत ग्राहक अब 123 मुद्राओं में भुगतान भेज सकेंगे। जेपी मॉर्गन पेमेंट्स के एक्सपेडाइट सॉल्यूशन के इंटीग्रेशन से इंडसइंड बैंक के ग्राहक सीधे लाभार्थी की स्थानीय मुद्रा में पैसे भेज सकेंगे। इससे उन्हें बेहतर सेटलमेंट सुविधाओं का लाभ मिलेगा, रेमिटेंस की प्रक्रिया आसान होगी और बीच में मुद्रा बदलने की जरूरत कम होगी। एक्सपेडाइट सॉल्यूशन जेपी मॉर्गन पेमेंट्स के वैश्विक नेटवर्क का इस्तेमाल करता है। यह मुद्रा विनिमय दरों की ऑटोमेटेड फीड उपलब्ध कराने के साथ भुगतान प्रक्रिया को भी आसान बनाता है, जिससे अंतरराष्ट्रीय धन हस्तांतरण अधिक तेज और कुशल हो जाता है। फिलहाल ग्राहक इस सेवा का लाभ इंडसइंड बैंक की शाखाओं में उठा सकते हैं। जल्द ही यह सुविधा इंटरनेट और मोबाइल बैंकिंग के माध्यम से भी उपलब्ध होगी। इससे ग्राहक 24 घंटे और सप्ताह के सातों दिन कभी भी विदेशों में पैसे भेजने की प्रक्रिया शुरू कर सकेंगे। इंडसइंड बैंक के एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर गणेश संकरण ने कहा, हमारे ग्राहक तेजी से वैश्विक बाजारों से जुड़ रहे हैं। ऐसे में अंतरराष्ट्रीय भुगतान को अधिक सरल और सहज बनाना हमारी प्राथमिकताओं में शामिल है। जेपी मॉर्गन पेमेंट्स के साथ साझेदारी से हम सीमा पार भुगतान की अपनी क्षमताओं को मजबूत कर रहे हैं। इसके तहत 123 मुद्राओं में भुगतान की सुविधा का विस्तार करने के साथ स्थानीय मुद्रा में सीधे सेटलमेंट की सुविधा भी दे रहे हैं। इससे हमारे ग्राहकों का रेमिटेंस अनुभव बेहतर होगा और अधिक कनेक्टेड, सुविधाजनक तथा भविष्य की जरूरतों के अनुरूप बैंकिंग अनुभव उपलब्ध कराने की हमारी प्रतिबद्धता भी मजबूत होगी। जेपी मॉर्गन पेमेंट्स के हेड ऑफ इंडिया पेमेंट्स गुहाप्रसाथ राजगोपाल ने कहा, जेपी मॉर्गन पेमेंट्स के एक्सपेडाइट सॉल्यूशन के माध्यम से हम इंडसइंड बैंक के ग्राहकों को एकीकृत सीमा पार भुगतान सुविधा उपलब्ध कराएंगे। अपने वैश्विक प्लेटफॉर्म और स्थानीय विशेषज्ञता को एक साथ लाकर हम सीमा पार भुगतान सेवाओं के लिए एक भरोसेमंद कॉरेस्पॉन्डेंट बैंक के रूप में काम करते हैं। इससे ग्राहक अधिक तेजी और सुरक्षित तरीके से धन का हस्तांतरण कर सकेंगे।

सोनी इंडिया ने लॉन्च किया FX5, इंटरनल रॉ रिकॉर्डिंग और ओपन गेट शूटिंग वाला सिनेमा लाइन कैमरा

नई दिल्ली : सोनी ने अपनी सिनेमा लाइन सीरीज में नया फुल-फ्रेम कैमरा FX5 पेश किया है। इसमें नए सिरे से विकसित फुली स्टैक्ड सीएमओएस इमेज सेंसर है, जो 15 से ज्यादा स्टॉप की डायनेमिक रेंज, डुअल गेन शूटिंग मोड और तीन बेस आईएसओ सेटिंग्स से सेंसिटिविटी परफॉर्मेंस को और बेहतर बनाता है। सिनेमा लाइन FX सीरीज में पहली बार यह कैमरा ओपन गेट शूटिंग के साथ सोनी के अपने रॉ फॉर्मेट X-OCN में कैमरे के भीतर ही रिकॉर्डिंग सपोर्ट करता है। कैमरा 5K में 60 फ्रेम प्रति सेकंड तक, 4K में 120 फ्रेम प्रति सेकंड तक और एफएचडी में 240 फ्रेम प्रति सेकंड तक शूट कर सकता है। ये खूबियां सिनेमा लाइन के लुक और प्रोडक्शन की जरूरतों के हिसाब से तैयार ऑपरेबिलिटी को एक कॉम्पैक्ट और आसानी से साथ ले जाने लायक बॉडी में लाती हैं। FX5 के साथ सोनी इंडिया ने दो वैकल्पिक एक्सेसरीज भी पेश की हैं: अलग किया जा सकने वाला ओएलईडी व्यूफाइंडर और एक्सएलआर हैंडल, जिससे 96 kHz/32-बिट फ्लोट तक इन-कैमरा ऑडियो रिकॉर्डिंग हो पाती है। इस कैमरा सिस्टम में वह विशेषज्ञता शामिल है, जो सोनी ने सिनेमा लाइन कैमरों के विकास के दौरान हासिल की है। इन कैमरों को दुनियाभर के सिनेमैटोग्राफर्स और वीडियो क्रिएटर्स से खूब सराहना मिली है। सोनी इंडिया में इमेजिंग एंड प्रोफेशनल सॉल्यूशन बिजनेस के हेड मुकेश श्रीवास्तव ने कहा, FX5 हमारी सिनेमा लाइन सीरीज का सबसे नया कैमरा है, जिसे आज के फिल्ममेकर्स और सिनेमैटोग्राफर्स की बदलती जरूरतों को ध्यान में रखकर बनाया गया है। नए सिरे से विकसित फुल-फ्रेम सेंसर, इंटरनल रॉ रिकॉर्डिंग और FX सीरीज में पहली बार ओपन गेट शूटिंग सपोर्ट के साथ यह क्रिएटर्स को बेजोड़ रचनात्मक लचीलापन और सिनेमाई अभिव्यक्ति देता है। सोनी में हम इमेजिंग टेक्नोलॉजी की सीमाएं आगे बढ़ाने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं। FX5 इस बात का सबूत है कि हम क्रिएटर्स को ऐसे टूल देने के लिए समर्पित हैं, जो शूटिंग का माहौल कैसा भी हो, उनकी सोच को हकीकत में बदल सकें।

राहक बनकर आए और ज्वेलरी दुकान से पार किया 2 करोड़ का सोना, जंगल से गैंग के 4 लोग गिरफ्तार

जगदलपुर। छत्तीसगढ़ के जगदलपुर के पैलेस रोड स्थित मोती ज्वेलर्स शॉप में 7 नवंबर को हुई उठाईगिरी मामले का पुलिस ने पर्दाफाश कर दिया है. इस बड़ी वारदात के पीछे महिला गैंग ने अंजाम दिया है, जिसमें आधा दर्जन लोग शामिल हैं. वहीं पार किए गए सोने की कीमत 1 करोड़ 75 लाख है. पुलिस ने 2 नाबालिग समेत 4 गिरफ्तार किया है. दरअसल, यह पूरी वारदात ज्वेलरी दुकान में लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई थी. अपराध दर्ज कर पुलिस ने जांच शुरू की तब सीसीटीवी फुटेज खंगाले गए. इस दौरान संदिग्धों और स्कॉर्पियों की पहचान की गई, जिससे वह दुकान पहुंचे थे. वाहन को ट्रेक करने के बाद पुलिस आरोपियों के गांव रायकोट पथरेली उड़वा तक पहुंची. ग्रामीणों ने पुलिस



को आरोपियों के नाम की पुष्टि की. इसके बाद 4 संदेहियों को पकड़ा गया है. वहीं सीसीटीवी में कैद वह संदिग्ध बच्ची में पुलिस के हाथ लगी, जिसने आभूषणों के डब्बे को झोले में डाला था. अन्य आरोपियों की तलाश जारी है.

डिब्बा गायब होने पर खंगाले गए सीसीटीवी फुटेज- कुछ समय बाद जब दुकान में सोने का डिब्बा नहीं मिला तो संचालकों ने उसकी तलाश शुरू की. काफी खोजबीन के बाद भी डिब्बे का पता नहीं चलने पर दुकान के सीसीटीव फुटेज चेक किए गए. फुटेज में महिला की पूरी गतिविधि सामने आई. इसमें वह पहले आसपास देखती है और फिर झुमकों से भरा डिब्बा उठाकर बच्ची को देती नजर आ रही है.

इसके बाद दुकान संचालक ने डिब्बे में 1200 ग्राम सोने के जेवरात होने की बात कही. शिकायत के बाद पुलिस ने मामले में एफआईआर दर्ज किया. पुलिस ने फुटेज के आधार पर जांच शुरू की है. एएसपी सुखनंदन सिंह राठौर ने बताया कि दिवाली के पहले दिन मोती ज्वेलर्स में उठाईगिरी का मामला आया था. दुकान संचालक ने 1200 ग्राम सोने के जेवरात पार किए जाने की शिकायत की थी, जिस पर पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू की. स्कॉर्पियो वाहन को ट्रैक करने के बाद पुलिस आरोपियों के गांव तक पहुंची. रायकोट के जंगल में छिपे हुए आरोपी को गिरफ्तार किया. वहीं 2 नाबालिगों को हिरासत में लेकर उनसे पूछताछ की जा रही है. एक ऑटो भी जब्त किया गया है।

एनएमडीसी स्टील प्लांट में दर्दनाक हादसा,पिघले स्लैग की चपेट में आने से ऑपरेटर की मौत

जगदलपुर। बस्तर जिले के नगरनार स्थित एनएमडीसी स्टील प्लांट में एक दर्दनाक हादसा हुआ है। यहां पिघले हुए स्लैग की चपेट में आने से एक ऑपरेटर की मौके पर ही मौत हो गई। इस हादसे से प्लांट में अफरा-तफरी मच गई है। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच में जुट गई है। जानकारी के अनुसार, मृतक की पहचान 31 वर्षीय मंगल साय के रूप में हुई है। वह छोटे देवड़ा का निवासी था। बताया जा रहा है कि मंगल साय वर्ष 2023 से एनएमडीसी स्टील प्लांट में ऑपरेटर के पद पर कार्यरत था। काम के दौरान वह अचानक पिघले हुए स्लैग की चपेट में आ गया। हादसा इतना



गंभीर था कि उसकी मौके पर ही मौत हो गई।

उत्पादन शाखा में हुआ हादसा- मामले को लेकर एडिशनल एसपी सुखनंदन राठौर ने बताया कि प्लांट की उत्पादन शाखा में काम करने के दौरान एक टेक्नीशियन पिघले हुए स्लैग की चपेट में आ गया, जिसकी वजह से घटनास्थल पर ही उसकी मौत हो गई। घटना की जानकारी मिलते ही नगरनार पुलिस मौके पर पहुंची और कानूनी कार्रवाई शुरू कर दी है। फिलहाल, हादसा कैसे और किन परिस्थितियों में हुआ, पुलिस इसकी जांच कर रही है। दुर्घटना के पीछे की वजहों का भी पता लगाया जा रहा है।

छठ महापर्व से पहले संवर रहा जगदलपुर का गंगा मुंडा, घाटों और परिसर में चला सघन स्वच्छता अभियान



जगदलपुर/ लोक आस्था और सूर्योपासना के महापर्व छठ की तैयारियों के मद्देनजर जगदलपुर के प्रसिद्ध गंगा मुंडा तालाब परिसर में बुधवार को व्यापक स्वच्छता अभियान चलाया गया। छठव्रतियों और श्रद्धालुओं की सुविधा तथा पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखते हुए पूरे घाट व आसपास के क्षेत्र की मुस्तैदी से साफ-सफाई की गई। गुरुवार को भी यहां स्वच्छता अभियान चलाया जाएगा। छठ पर्व के दौरान गंगा मुंडा में अस्ताचलगामी और उदीयमान भगवान भास्कर को अर्घ्य देने के लिए बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचते हैं। इसे देखते हुए अभियान के तहत घाटों की सीढ़ियों, पूजा स्थलों और संपर्क मार्गों पर बिखरे कचरे, प्लास्टिक अपशिष्ट और जलकुंभी को हटाया गया। स्थानीय प्रशासन, स्वयंसेवी संस्थाओं और नागरिकों की सक्रिय सहभागिता से चलाए गए इस अभियान का मुख्य उद्देश्य श्रद्धालुओं को स्वच्छ, सुरक्षित और सुव्यवस्थित वातावरण उपलब्ध कराना है। स्थानीय लोगों ने अभियान में बढ़-चढ़कर श्रमदान किया और जलस्रोतों को स्वच्छ बनाए रखने का संकल्प लिया। घाटों की सफाई के साथ-साथ प्रकाश व्यवस्था और सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम भी सुनिश्चित किए जा रहे हैं, ताकि पर्व के दौरान श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

पटवारियों की हड़ताल को कांग्रेस का समर्थन, आंदोलन स्थल पहुंचकर शशि सिंह ने दिया साथ का भरोसा

सूरजपुर ब्यूरो(दैनिक विश्व परिवार)-अपनी मांगों को लेकर आंदोलन कर रहे पटवारियों को जिला कांग्रेस कमेटी का समर्थन मिला है। जिला कांग्रेस अध्यक्ष शशि सिंह एवं जिला महामंत्री संजय डोसी ने हाईटेक बस स्टैंड सूरजपुर पहुंचकर धरनारत पटवारियों से मुलाकात की और उनके आंदोलन को समर्थन देते हुए उनकी मांगों के प्रति एकजुटता जाहिर की।

इस दौरान कांग्रेस नेताओं ने पटवारियों से चर्चा कर उनकी समस्याओं एवं मांगों की जानकारी ली। जिला कांग्रेस अध्यक्ष शशि सिंह ने कहा कि पटवारी राजस्व व्यवस्था की महत्वपूर्ण कड़ी हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में आम नागरिकों को राजस्व संबंधी सेवाएं उपलब्ध कराने में उनकी अहम भूमिका होती है। ऐसे में उनकी समस्याओं और मांगों पर शासन-प्रशासन को गंभीरता से विचार करना चाहिए। उन्होंने कहा कि अपनी जायज मांगों को लेकर संघर्ष कर रहे पटवारियों के साथ कांग्रेस पार्टी खड़ी है। उनकी समस्याओं का निराकरण संवाद और सकारात्मक पहल के माध्यम से किया



जाना चाहिए, ताकि आंदोलन का समाधान निकल सके और आम जनता को भी राजस्व संबंधी कार्यों में परेशानी का सामना न करना पड़े।

इस अवसर पर महामंत्री संजय डोसी ने भी पटवारियों के आंदोलन के प्रति समर्थन व्यक्त करते हुए उनकी मांगों पर शासन से संवेदनशीलता के साथ विचार करने की अपेक्षा जताई। कांग्रेस नेताओं ने आंदोलनरत पटवारियों को भरोसा दिलाया कि उनकी आवाज को बुलंद करने में पार्टी उनके साथ खड़ी रहेगी। इस दौरान बढ़ी संख्या में आंदोलनरत पटवारी व संघ के पदाधिकारी उपस्थित थे। पटवारी संघ ने अपनी मांगों का पत्र जिलाध्यक्ष को भी प्रदान कर मांगो से अवगत कराया।

दलपत सागर चौपाटी में पुलिस चौकी खोलने कांग्रेस ने सौंपा पुलिस अधिक्षक के नाम ज्ञापन -जावेद खान

निगम द्वारा विस्थापित दलपद सागर की नवीन चौपाटी में सुबह से अर्धरात्रि तक असामाजिक तत्वों का रहता है जमावड़ा पुलिस लगाए लगाम-विशाल खंबारी

निकट भविष्य में किसी भी प्रकार की अप्रिय स्थिति ना बने इसे देखते हुए पुलिस की 112 को नियमित रूप से रानी गदिया में खड़ी करने की रखी गई मांग-शेख जाहिद

जगदलपुर। बस्तर जिला कांग्रेस के प्रतिनिधिमंडल ने आज पुलिस अधीक्षक के नाम एडिसनल एस पी सुखनंदन राठौर को ज्ञापन सौप दलपद सागर के नवीन चौपाटी के समीप पुलिस चौकी खोलने की मांग करते हुए रानी गदिया के आस-पास से असामाजिक तत्वों को हटाने की मांग करी।इस दौरान कांग्रेस पार्टी के प्रतिनिधि मंडल ने एडिसन एस पी सुखनंदन राठौर को चौपाटी के आस-पास की स्थिति से अवगत कराते हुए बताया कि जगदलपुर नगर निगम के द्वारा दलपद सागर के मुख्य द्वार के



सामने बनी चौपाटी को दलपद सागर के (रानी गदिया) के सामने विस्थापित किया गया है,जहां विभिन्न प्रकार के खान-पान की गुमटियां लगाई गई हैं जहां शहर के गणमान्य नागरिक संध्या काल में सह परिवार उन गुमटियों में विभिन्न व्यंजनों का आनंद लेने जाते हैं परंतु चौपाटी के आस-पास शहर के युवाओं के अलावा असामाजिक तत्वों की भीड़ लगातार बढ़ रही है जो लगातार वहां हुड़दंग करते हुए बाइक-कार से स्टंट करते हैं और चौपाटी के पास भय का वातावरण उत्पन्न कर रहे हैं इसके साथ-साथ असमाजिक तत्वों के द्वारा सड़क पर जमघट लगाकर जन्मदिन मनाना,पटाखे फोड़ना, छोटी-छोटी बातों पर आपस में झगड़े करना और राहगिरों को परेशान करने का कार्य भी कर रहे हैं तथा चौपाटी के इर्द-गिर्द युवक और युवतियों के द्वारा खुलेआम नशाखोरी करते देखा जा रहा है जो एक सभ्य समाज और जगदलपुर जैसे शांति प्रिय शहर के लिए खतरा बन रहे हैं।

कांग्रेस पार्टी के दल के द्वारा चौपाटी में निर्मित हो रही स्थिति को देखते हुए एवं भविष्य में किसी बड़ी अप्रिय घटना के घटने की आशंका जाहिर की है और पुलिस अधीक्षक के नाम ज्ञापन सौंप कर नगर निगम जगदलपुर के द्वारा बनाई गई नवीन चौपाटी के पास एक पुलिस चौकी खोलने की मांग रखी है एवं तत्काल प्रभाव से रानी गदिया के पास पुलिस की 112 गाड़ी को अनिवार्य रूप से खड़ी कर असमाजिक तत्वों पर नजर रखने की मांग की है ताकि जगदलपुर की जनता को उक्त सड़क एवं चौपाटी में स्वच्छ और निर्भिक वातावरण मिल सके। ज्ञापन सौपने के दौरान स्थानीय पार्षद जाहिद हुसैन, कांग्रेस प्रदेश प्रवक्ता जावेद खान, पूर्व युवा कांग्रेस जिलाध्यक्ष अजय बिसाई,एन एस यू आई जिला अध्यक्ष विशाल खंभारी,छात्र नेता नितेश एवं मो. नसीम मौजूद थे।

दैनिक
विश्व परिवार

विचार-पक्ष

रायपुर, गुरूवार 12 नवंबर 2026

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संपादकीय

तो ऐसे निकलेंगे चैंपियन खिलाड़ी

प्रतिरोध पर उतरना ही एकमात्र रास्ता

जब मूलभूत प्रश्न राजनीतिक दलों के लिए महत्त्वपूर्ण नहीं रहते और लोकतांत्रिक प्रक्रियाएं जन समस्याओं का समय पर समाधान नहीं कर पातीं, तो जाहिर है, लोगों को प्रतिरोध पर उतरना ही एकमात्र रास्ता नजर आता है। सड़कों पर उतरे असंतोष की चपेट में आने वाला सबसे नया देश इंडोनेशिया बना है। इससे पहले फ्रांस से लेकर अर्जेंटीना और इटली से लेकर ट्यूनिशिया तक में छात्र और युवाओं ने सड़कों पर उतर कर वहां मौजूद हालात पर अपना विरोध जताया है। इस सिलसिले में यह वाजिब राय बनी है कि दुनिया के अलग-अलग कोनों से जन प्रदर्शनों और आंदोलनों की आ रही तस्वीरें दरअसल एक बड़े वैश्विक संकट और बढ़ते जा रहे युवा असंतोष की ओर इशारा करती हैं। यूरोप के समृद्ध देशों में भी बढ़ती महंगाई शिक्षा के गिरते स्तर से असंतुष्ट नौजवान सड़कों पर उतरने को मजबूर हुए हैं। लगभग हर जगह वे संस्थानों से निष्पक्षता, पारदर्शिता, और अपने लिए बेहतर भविष्य की मांग कर रहे हैं। फ्रांस में स्कूलों की खराब स्थिति, बेल्जियम, ग्रीस और अर्जेंटीना में उच्च शिक्षा बजट में कटौती, और स्पेन एवं पुर्तगाल में मकान किराये में बेलगाम बढ़ोतरी ने नौजवानों में गुस्सा भड़काया है। अल्बानिया में छात्रों ने भ्रष्टाचार का मुद्दा उठाया है और शिक्षा सुधारों की मांग कर रहे हैं, जबकि ट्यूनिशिया में आर्थिक तंगी के साथ-साथ लोकतांत्रिक अधिकारों और सिकुड़ती गई स्वतंत्रताओं को लेकर गहरा आक्रोश है। इंडोनेशिया में महंगाई ने नौजवानों को सड़क पर आने के लिए विवश किया है। स्पष्ट है कि ये आंदोलन छिटपुट घटनाएं नहीं हैं, बल्कि वर्तमान आर्थिक और संस्थागत ढांचों के प्रति नई पीढ़ी में गहराए अविश्वास का परिणाम हैं। नव-उदारवाद के दौर में दुनिया भर में शिक्षा के व्यापारीकरण हुआ है, वहीं मकान, बिजली, और रोजगार के अवसर आदि युवाओं की पहुंच से दूर होते जा रहे हैं। जब मूलभूत प्रश्न राजनीतिक दलों के लिए महत्त्वपूर्ण नहीं रह जाते और लोकतांत्रिक प्रक्रियाएं लोगों की समस्याओं का समय पर समाधान नहीं कर पातीं, तो जाहिर है, लोगों को प्रतिरोध पर उतरना ही एकमात्र रास्ता नजर आता है। अत: आंसू गैस, वॉटर कैनन, या धर-पकड़ जैसे बल प्रयोग से जन आक्रोश को दबाने का तरीका अस्थायी रूप से ही कारगर हो सकता है। सत्ताधारियों ने यह बात नहीं समझी, तो वे अधिक बड़ी उथल-पुथल को आमंत्रित करेंगे। और यह बात हर देश पर लागू होती है!

भूपिंदर सिंह

जब चिट्टे जैसे नशे ने युवाओं को अपनी पकड़ में ले लिया है, ऐसे में खेल ही नशे से विद्यार्थियों को दूर रख सकता है हिमाचल प्रदेश में अभी तक वह वातावरण ही नहीं बन पा रहा है जिससे हम अपने स्टार खिलाड़ियों का पलायन रोक सकें। जब खिलाड़ी को सुविधा नहीं मिलेगी तो उसे फिर कैसे रोका जा सकता है। कोई भी पढ़ाई या परीक्षा पहले अपने लिए, फिर देश के लिए, मगर खेल केवल व केवल देश के लिए होता है। वहां जब खिलाड़ी जीतता है तो उस देश का झंडा सबसे ऊपर उठता है और उस देश की धुन पूरा विश्व आदर के साथ सुनता है। हिमाचल में ओलंपियन व एशियाई पदक विजेता मुक्केबाज आशीष चौधरी को उसका विभाग प्रशिक्षण के लिए फ्री नहीं रख रहा था। बहुत प्रयास करने बाद ही उसे प्रशिक्षण के लिए भेजा। खेल में अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुंचने के लिए आठ से दस साल का लगातार प्रशिक्षण कार्यक्रम चाहिए होता है। अगर हम एक सप्ताह भी खेल प्रशिक्षण में बाधा डालते हैं तो फिर हम उसे बहुत ही कठिनाई से पूरा कर पाते हैं। इसलिए केंद्र व राज्य सरकारों के विभाग अपने राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों के प्रशिक्षण समय को आन ड्यूटी मानते हैं, चाहे खिलाड़ी कैंप हो या किसी भी ट्रेनिंग सेंटर में। ऐसा प्रावधान सेवा नियमों में भी प्रेजिडेंट महोदय ने रखा है। हिमाचल प्रदेश के विभिन्न विभागों के कई मुखिया पता नहीं किस पूर्वाग्रह से ग्रसित हैं जो देश के झंडे से जुड़े हुए इस विषय में भी नकारात्मक सोच रखते हैं। जो खिलाड़ी राष्ट्रीय, एशियाई प्रतियोगिताओं में पदक जीत कर ओलम्पिक तक भारत का प्रतिनिधित्व कर चुका है, अगर उसे ही अपना प्रशिक्षण जारी रखने के लिए सरकार व विभाग की मिन्नतें करनी पड़ रही हैं तो फिर आम खिलाड़ी का क्या होगा? हिमाचल सरकार को चाहिए कि ओलंपिक, एशियाई व राष्ट्रमंडल खेलों को देखते हुए खिलाड़ियों को ट्रेनिंग के लिए फ्री रखा जाए, जैसा केंद्र व राज्यों के विभाग अपने अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों को रखते हैं। हिमाचल में महिला कबड्डी, हैंडबाल व अन्य कई खेलों में अच्छे राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी हैं। उन्हें भी प्रशिक्षण के लिए फ्री रखा जाए। हिमाचल प्रदेश में सैंकड़ों खिलाड़ी खेल आरक्षण के अंतर्गत विभिन्न विभागों में नौकरी कर रहे हैं। दर्जन भर खिलाड़ियों को छोड़ कर न तो कोई खेल कर रहा है और न ही प्रशिक्षण व अन्य खेल प्रबंधन से जुड़ा है। इसका प्रमुख कारण हिमाचल में खेल संस्कृति का न होना है। जो खिलाड़ी कर्मचारी को खेल करने व करवाने से रोकती है और यह राज्य में खेलों के लिए शुभ संकेत नहीं है। वैसे तो देश के केंद्रीय व राज्यों के विभिन्न विभागों में खेल आरक्षण से नौकरी प्राप्त खिलाड़ी कर्मचारी को नौकरी के पहले पांच वर्षों तक खेल करना अनिवार्य होता है, मगर हिमाचल में इक्का दुक्का खिलाड़ी कर्मचारियों ने ही खेल किया है। हिमाचल प्रदेश सरकार राज्य के विभिन्न विभागों में खेल आरक्षण के अंतर्गत तीन प्रतिशत पदों पर भर्ती करती है। शिक्षा विभाग में अब तक सैंकड़ों प्रवक्ता, प्रशिक्षित स्नातक व अन्य पदों पर खेल आरक्षण से शिक्षक नियुक्त हैं। हिमाचल प्रदेश का हर बच्चा विद्यालय जा रहा है। वैसे तो विद्यालय में विद्यार्थियों की फिटनेस व खेलों के लिए शारीरिक शिक्षा का शिक्षक नियुक्त होता है



मगर वह हर खेल के लिए प्रशिक्षण नहीं दे सकता है। भविष्य के अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी तैयार करने के लिए किशोरावस्था से ही सही तकनीक के साथ प्रशिक्षण कार्यक्रम का महत्व बढ़ जाता है। अरबों की आबादी में किसी खेल विशेष में सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए क्षमतावान प्रशिक्षक का प्रारंभिक स्तर से होना बेहद अनिवार्य हो जाता है जो सही उम्र में सही तकनीक सिखा कर भविष्य में खिलाड़ी उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकें। हिमाचल प्रदेश में खेल प्रशिक्षण के लिए शुरू से वह वातावरण ही नहीं बन पा रहा है जिस से बाद में प्रशिक्षक खिलाड़ी से राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर श्रेष्ठतम परिणाम दिला सके। हम पहले भी लिख चुके हैं कि खेल प्रशिक्षण दस साल से भी अधिक समय तक लगातार चलने वाली प्रक्रिया है। इतने लंबे खेल प्रशिक्षण को प्राप्त कर कुछ एक खिलाड़ी ही अपने प्रदेश व देश को गौरव दिला पाते हैं। हिमाचल प्रदेश में विद्यालय स्तर पर शारीरिक शिक्षकों की कमी सबके सामने है। विद्यालय जीवन ही वह समय है जब खिलाड़ी तकनीक को सीख रहा होता है। हिमाचल प्रदेश में लगातार प्रशिक्षण के लिए विद्यालय खुलने से पहले व बंद होने के बाद हिमाचल प्रदेश में शारीरिक शिक्षकों को छोड़ कर अन्य विषयों के शिक्षक जो पूर्व में अच्छे खिलाड़ी रहे हैं, अपने पढ़ाई के कार्य के साथ साथ विभिन्न खेलों के लिए प्रशिक्षण करवा रहे हैं। विद्यालय के प्रधानाचार्यों व शारीरिक शिक्षा के अध्यापकों को चाहिए कि वे खेल सुविधा व प्रतिभा के अनुसार अपने विद्यालय में अच्छे प्रशिक्षकों के साथ प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाएं ताकि हिमाचल के खिलाड़ियों को विद्यालय में उच्च स्तरीय प्रशिक्षण सुविधा उपलब्ध हो सके। आज हिमाचल प्रदेश के कई विद्यालयों में विभिन्न प्रकार की खेलों के लिए स्तरीय प्ले फील्ड उपलब्ध है, मगर हिमाचल सरकार के शिक्षा विभाग ने तो यह फरमान जारी कर दिया है कि कोई भी अध्यापक जो शारीरिक शिक्षा का नहीं है, वह खेल नहीं करवा सकता है और न ही खेल गतिविधियों से जुड़ेगा। ऐसी नकारात्मक सोच क्यों? जब कि हर अध्यापक को किसी न किसी खेल व अन्य गतिविधियों में विद्यार्थियों को सिखाना उनकी सेवा शर्तों का हिस्सा है। पिछले वर्ष राजकीय महाविद्यालय हमीरपुर के वार्षिक ईनाम बांट समारोह में खिलाड़ियों को ईनाम स्टेज पर न देकर कमरे में शिक्षकों से दिलाए गए। खिलाड़ी विद्यार्थी व उनके साथ आए अभिभावक अपने बच्चों को स्टेज पर जाने का इंतजार ही करते रहे और दूसरी ओर कालेज प्रशासन व शिक्षक चमचागीरी में इतने खो गए कि राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर पोजीशन लाने वालों को ईनाम कमरे में और हाऊस टैस्ट वालों को स्टेज पर, फिर बताओ हिमाचल में रह कर कौन खेल करेगा। आज खेल भी एक विषय है। क्या शारीरिक प्राध्यापक को फिजिक्स वाले प्राध्यापक से कम वेतन व पदोन्नति मिलती है, जब सब विषय बराबर हैं तो यह भेद भाव किस लिए। सरकार इस बात को समझें जब चिट्टे जैसे नशे ने किशोरों व युवाओं को अपनी पकड़ में ले लिया है ऐसे में खेल ही एक ऐसा माध्यम है जो नशे से विद्यार्थियों को दूर रख सकता है। फिर विद्यार्थियों में से ही भविष्य के अच्छे नागरिक व उत्कृष्ट प्रदर्शन वाले खिलाड़ी भी निकलते हैं। इसलिए स्कूल स्तर से ही प्रशिक्षण की व्यवस्था होनी चाहिए।

आलेख

खादी और ग्रामोद्योग-समावेशी और टिकाऊ भारत का ताना-बाना बुनना

सुश्री रूप राशि और डॉ. नितेश धवन

हम भारत के गौरवान्वित नागरिक हैं—जो आज नामीनल जीडीपी की दृष्टि से विश्व की छठी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है । आर्थिक विकास का एक बड़ा हिस्सा एमएसएमई क्षेत्र से संचालित होता है, जिसका देश की समग्र जीडीपी में एक-तिहाई योगदान है। इसमें भी ग्रामीण सूक्ष्म उद्यमों का प्रमुख योगदान है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से खादी और हथकरघा क्षेत्र जैसे कुटीर उद्योगों के साथ-साथ ग्रामीण कारीगरों द्वारा निर्मित हस्तशिल्प उत्पादों पर निर्भर करती है। ऐसे समय में, जब दुनिया असमानता, जलवायु परिवर्तन और संसाधनों के क्षरण जैसी चुनौतियों से जूझ रही है, वहीं आईटी और सॉफ्टवेयर के क्षेत्र में एआई नौकरियों को लगातार निगलते हुए तेजी से आगे बढ़ रहा है। ऐसे में, खादी और ग्रामोद्योग (केवीआई) सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को आगे बढ़ाने और आत्मनिर्भर भारत के विज़न को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। ये कम संसाधनों का उपयोग करके विभिन्न कौशल स्तरों पर रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाकर स्थानीय स्तर पर पलायन को कम करने में भी सक्षम हैं। खादी—हाथ से काता और हाथ से बुना हुआ—भारत की आत्मा रही है। जिम्मेदार उत्पादन में ऊर्जा और जल का दक्षतापूर्वक उपयोग करते हुए प्राकृतिक रेशों का इस्तेमाल किया जाता है। विकास के वाहक के रूप में इसकी क्षमता को,धीमी गति से ही सही, लेकिन निरन्तर मान्यता मिल रही है। हमारा उद्योग एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है, जो प्राचीन काल से चली आ रही है और मानव भावनाओं के व्यक्तिगत स्पर्श तथा अनुकरणीय कौशल के साथ विविध कलात्मक अभिव्यक्तियों को प्रदर्शित करती है। ऋग्वेद, रामायण, महाभारत, थालिया (यूनानी इतिहासकार हेरोडोटस द्वारा रचित) और कौटिल्य से संबंधित विभिन्न लिखित ग्रंथों में न केवल कताई और बुनाई का उल्लेख मिलता है, बल्कि रेशम और कपास की उच्च गुणवत्ता का भी उल्लेख किया गया है। रामायण में कपास का उल्लेख संत के गुणों से जोड़कर किया गया है, वहीं विभिन्न प्रकार की बुनाइयां समृद्ध सांस्कृतिक ताने-बाने को दर्शाती हैं। हाथ से काते और हाथ से बुने 'जनसमूह द्वारा उत्पादित' खादी का उपयोग महात्मा गांधी जी ने उपनिवेशवादियों द्वारा बड़े पैमाने पर किए जाने वाले उत्पादन का मुकाबला करने के लिए किया था। स्वतंत्रता का यह वस्त्र आज अपने प्राकृतिक, आरामदायक और सतत् होने के विशिष्ट गुणों के कारण पसंदीदा फैशन स्टेटमेंट बनता जा रहा है। इसका हस्तनिर्मित स्वरूप इसे विशिष्ट पहचान प्रदान करता है और इसलिए इसे बड़े पैमाने पर होने वाले सामान्यीकृत उत्पादन के साथ मात्रा के स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने की आवश्यकता नहीं है। खादी की यात्रा—स्वदेशी और स्वतंत्रता का एक प्रतीक होने से लेकर समकालीन फैशन और जीवनशैली की पसंद, विशेषकर पर्यावरण के प्रति जागरूक नई पीढ़ी की - बनने तक यह दर्शाती है कि कैसे परंपरा स्वयं को बदलती उपभोक्ता प्राथमिकताओं के अनुरूप ढाल सकती है। वास्तव में, निकट-स्रोत उत्पादन की परंपरा, जो अधिक सतत् है, खादी पारिस्थितिकी तंत्र की अंतर्निहित शक्ति है। 21वीं सदी में, केवीआईसी हमारे अधिदेश में माननीय प्रधानमंत्री के आह्वान—राष्ट्र के लिए खादी, फैशन के लिए खादी और परिवर्तन के लिए खादी—से प्रेरणा लेते हुए कृषि, फाइबर और बाजार के बीच जुड़ाव को सुदृढ़ करने में योगदान दे रहा है। यह ध्यान देने योग्य बात है कि हाथ से कताई, खादी और हथकरघा के बीच प्रमुख अंतरकारी विशेषता है। चूंकि सूत भी हाथ से तैयार किया जाता है, इसलिए उत्पादन की श्रम-प्रधान प्रकृति बड़ी संख्या में लोगों के लिए रोजगार के अवसर सृजित करती है। वितरित व्यवस्था के तहत तैयार किए गए हस्तनिर्मित लच्छों के एकत्रीकरण का कार्य करने वाली खादी संस्थाओं को पिछले सात दशकों से खादी और ग्रामोद्योग द्वारा सहायता प्रदान की जाती रही है। केवीआईसी के विभागीय और गैर-विभागीय प्रशिक्षण केंद्रों के माध्यम से कौशल विकास और कौशल उन्नयन के ज़रिए क्षमता वृद्धि की जा रही है। देश की दो-तिहाई ग्रामीण आबादी को देखते हुए, इस क्षेत्र का विशेष महत्व है, क्योंकि यह ग्रामीण उद्यमियों के लिए पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराता है। इस प्रकार के हस्तक्षेप जमीनी स्तर पर लोगों के लिए आय सृजन के अवसर पैदा करके सीधे एसडीजी 1 (गरीबी उन्मूलन) और एसडीजी 8 (सम्मानजनक कार्य और आर्थिक विकास) को आगे बढ़ाते हैं।

मत्स्य पालन से समृद्ध हो रही सरगुजा की ग्रामीण अर्थव्यवस्था..... किसानों और महिलाओं के लिए खुल रहे स्वरोजगार के नए अवसर

छत्तीसगढ़ के ग्रामीण अंचलों में अब खेतों और तालाबों के साथ आजीविका डबरियां, जलाशय और अमृत सरोवर भी किसानों तथा ग्रामीण परिवारों की आर्थिक समृद्धि का माध्यम बन रहे हैं। खेती और पशुपालन के साथ मत्स्य पालन को अपनाकर ग्रामीण परिवार अपनी आय के स्रोत बढ़ा रहे हैं। सरगुजा जिले में शासन की विभिन्न योजनाओं, मत्स्य पालन विभाग के तकनीकी मार्गदर्शन और स्थानीय जल संसाधनों के बेहतर उपयोग से आजीविका के नए अवसर विकसित हो रहे हैं। कहीं मछुआरा सहकारी समितियों के सैकड़ों सदस्य सामूहिक मत्स्य पालन से अपने परिवारों का भरण-पोषण कर रहे हैं, तो कहीं किसान डबरी में मछली पालन के साथ सब्जी उत्पादन और सिंचाई का लाभ उठा रहे हैं। वहीं स्व-सहायता समूहों की महिलाएं अमृत सरोवरों में मछली पालन कर आर्थिक आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ रही हैं। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में ग्रामीण आजीविका को मजबूत बनाने और स्वरोजगार के अवसरों का विस्तार करने की दिशा में विभिन्न योजनाओं के माध्यम से प्रयास किए जा रहे हैं। प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के अंतर्गत मिलने वाली अनुदान सहायता और विभागीय मार्गदर्शन से मत्स्य पालन को व्यवसाय के रूप में अपनाने के अवसर बढ़ रहे हैं। सरगुजा जिले में पारंपरिक जलाशयों से लेकर आधुनिक बायोफ्लॉक तकनीक तक मत्स्य पालन के विविध स्वरूप सामने आ रहे हैं। इन प्रयासों की विशेषता यह है कि ग्रामीण परिवार उपलब्ध भूमि और जल संसाधनों का उपयोग एक से अधिक आजीविका गतिविधियों के लिए कर रहे हैं। सरगुजा जिले का घुनघुट्टा जलाशय सामूहिक मत्स्य पालन के माध्यम से ग्रामीण परिवारों को आजीविका उपलब्ध कराने का उदाहरण है। यहां आदिवासी मछुआ सहकारी समिति, कलगसा के 381 सदस्य मत्स्य पालन से जुड़े हुए हैं। समिति को जलाशय 10 वर्ष की अवधि के लिए पट्टे पर उपलब्ध कराया गया है, जिससे सदस्य संगठित रूप से मत्स्य उत्पादन की गतिविधियां संचालित कर रहे हैं। जलाशय में मछली पालन से जुड़े कार्य इन परिवारों के लिए आजीविका का महत्वपूर्ण साधन बने हुए हैं। समिति के अध्यक्ष श्री राम बिलोच राम बताते हैं कि प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के अंतर्गत मछली बीज के लिए 7 लाख 62 हजार रुपये की अनुदान सहायता मिलती है। इस सहयोग से जलाशय में मत्स्य उत्पादन की गतिविधियों को आगे बढ़ाने में मदद मिल रही है। सहकारी समिति के माध्यम से सामूहिक प्रयासों का लाभ बड़ी संख्या में मछुआरा परिवारों तक पहुंच रहा है। घुनघुट्टा जलाशय का यह उदाहरण दर्शाता है कि उपलब्ध जल संसाधनों का योजनाबद्ध उपयोग और सहकारी व्यवस्था ग्रामीण परिवारों के लिए स्थायी आजीविका के अवसर विकसित करने में सहायक हो सकती है। ग्रामीण क्षेत्रों में निर्मित आजीविका डबरियां अब केवल वर्षा जल संरक्षण तक सीमित नहीं हैं, बल्कि किसानों के लिए अतिरिक्त आय का माध्यम भी बन रही हैं। इन डबरियों में वर्षा जल का संचय कर किसान मछली पालन कर रहे हैं और आवश्यकता के अनुसार पानी का उपयोग सब्जी उत्पादन तथा फसलों की सिंचाई में भी कर रहे हैं। इससे एक ही संसाधन का उपयोग कई आर्थिक गतिविधियों के लिए संभव हो रहा है। लखनपुर विकासखंड के किसान श्री शिवबालक ने अपनी आजीविका डबरी में कतला, रोहू, मृगल और ग्रास कार्प प्रजाति की मछलियों का पालन किया। उन्होंने लगभग दो क्विंटल मछली की बिक्री कर 20 से 25 हजार रुपये की आमदनी प्राप्त की। मछली पालन के साथ वे डबरी में संचित पानी का उपयोग सब्जी उत्पादन के लिए भी करते हैं। इस प्रकार डबरी उनके लिए जल संरक्षण, मत्स्य पालन और खेती को जोड़ने वाला उपयोगी संसाधन बन गई है। इसी तरह बतौली विकासखंड के किसान श्री लक्ष्मी प्रसाद ने डबरी में मछली पालन से लगभग एक लाख रुपये की आय अर्जित की है। उन्होंने करीब 20 क्विंटल मछली उत्पादन का आकलन किया है। डबरी में उपलब्ध पानी का उपयोग वे साग-सब्जी और गेहूं की सिंचाई के लिए भी कर रहे हैं। मत्स्य पालन से प्राप्त आय और सिंचाई की सुविधा ने उनके कृषि कार्यों को अतिरिक्त सहारा दिया है। इन उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि जल संरक्षण के लिए विकसित संरचनाओं को आजीविका गतिविधियों से जोड़ने पर किसानों को अतिरिक्त आर्थिक अवसर मिल सकते हैं। पहाड़ी कोरवा परिवार भी अपना रहे मछली पालन, डबरी की मेड़ों पर फलदार पौधों से अतिरिक्त आय की तैयारी सरगुजा जिले में आजीविका डबरियों के माध्यम से मत्स्य पालन का विस्तार अन्य ग्रामीण परिवारों तक भी हो रहा है। अम्बिकापुर विकासखंड की श्रीमती जोशमनि एक्का के परिवार ने 2 लाख 99 हजार रुपये की लागत से निर्मित डबरी में मछली पालन शुरू किया है। वहीं लखनपुर विकासखंड के किसान श्री कनी लाल बड़ा ने अपनी डबरी में 9 किलोग्राम मछली बीज डालकर मत्स्य पालन को सब्जी उत्पादन से जोड़ा है। इन गतिविधियों से परिवारों को खेती के साथ अतिरिक्त आय अर्जित करने की संभावनाएं मिल रही हैं। ग्राम लोसगी के पहाड़ी कोरवा किसान श्री ठिबुल राम ने भी आजीविका डबरी का बहुउद्देशीय उपयोग शुरू किया है। उन्होंने डबरी में 17 किलोग्राम मछली बीज डाला है। इसके साथ ही डबरी की मेड़ों पर अरहर, आम, मुनगा और नींबू के पौधे लगाए हैं। उनका प्रयास मछली पालन के साथ कृषि एवं बागवानी गतिविधियों को जोड़ने का उदाहरण है। मछलियों की बढ़वार और पौधों के विकसित होने के बाद इन गतिविधियों से परिवार को अतिरिक्त आय मिलने की संभावना है। इस प्रकार डबरी केवल जल संग्रहण की संरचना नहीं रहकर विविध आजीविका गतिविधियों का आधार बन रही है।

बंदा बहादुर व साथियों पर सन्नाटा क्यों ?

कुलदीप चंद अग्निहोत्री

क्या हम बंदा बहादुर के साथ अपने देश की स्वतंत्रता के लिए लड़े जाने वाले सैनिकों के नाम तलाश नहीं सकते। उनकी पीढियां तो अभी भी विद्यमान हैं। आशा है इस दिशा में कुछ काम होगा तीन दिन पहले उन बंदा बहादुर जी की जयंती थी जिसने सैकड़ों साल बाद भारत में मुगलों का सामना करने की सन् 1000 से चली आ रही रणनीति बदल दी थी और इसमें उन्हें अभूतपूर्व सफलता मिली थी। देश के विभिन्न हिस्सों में उनकी जयंती अत्यन्त उत्साह पूर्वक मनाई गई। लेकिन देश के विश्वविद्यालयों के डिफेंस स्टडीज विभागों में कहीं बन्दा बहादुर को लेकर चर्चा या कोई सेमिनार हुआ हो, ऐसी सूचना कम से कम मेरे पास नहीं है। मैंने कुछ स्थानों पर फोन कर यह सूचना एकत्रित करने की कोशिश भी की। बंदा बहादुर जम्मू कश्मीर के पुंछ क्षेत्र के रहने वाले थे। जम्मू कश्मीर सुरक्षा के लिहाज से भी और सुरक्षात्मक रणनीति के हिसाब से भी बहुत महत्वपूर्ण क्षेत्र है। एक ओर चीन और दूसरी ओर पाकिस्तान। वहां के विश्वविद्यालयों या महाविद्यालयों ने बन्दा बहादुर का नोटिस लिया हो, ऐसी कोई सूचना नहीं है। अरबों, तुर्कों व मुगलों के आक्रमण काल से भारत ने आक्रमणकारियों का मुकाबला ही किया है, कभी दुश्मन के घर जाकर लड़ाई लड़ी हो, ऐसे उदाहरण कम ही मिलते हैं। भारत सुरक्षात्मक रणनीति ही अपनाता रहा। लेकिन एक हजार सन् से चली आ रही इस सुरक्षात्मक सैनिक रणनीति को सन् 1700 के पहले दशक में बन्दा सिंह बहादुर ने पहली बार बदला। महाराष्ट्र में यह रणनीति शिवाजी मराठा ने अपनाई थी और पश्चिमोत्तर/सप्त सिन्धु में बन्दा बहादुर ने मुगलों के खिलाफ यह आक्रामक रणनीति अपनाई। सामान्य जनता की ओर से इसको जबरदस्त समर्थन मिला। यहां तक कि इस क्षेत्र के देसी मुसलमान, जिनके पुरखे कभी मुगलों के अत्याचारों से डर कर इस्लाम पंथ या शिया पंथ में चले गए थे, वे भी मुगलों के खिलाफ बन्दा बहादुर के साथ मिल गए थे। इस नई युद्ध नीति का परिणाम भी मिला। बन्दा बहादुर ने वर्तमान पंजाब, हरियाणा और हिमाचल का बहुत बड़ा भाग मुगल सत्ता व आक्रमणकारियों से स्वतंत्र करवा लिया। नई राज्य व्यवस्था लागू की। पहली बार 'जमीन जोतने वाले की' का सिद्धान्त व्यावहारिक स्तर पर लागू किया गया। राज्य किसी भी व्यक्ति के मजहब में दखलन्दाजी नहीं करेगा, यह पंथ निरपेक्षता को जमीनी धरातल पर लागू किया। बन्दा बहादुर बदले की राजनीति नहीं कर रहा था,



बल्कि वह तो विदेशी अन्यायी शासन व्यवस्था को हटा कर न्याय पर आधारित नया निजाम स्थापित करने का प्रयास कर रहा था। लेकिन बन्दा बहादुर पूरे सप्त सिन्धु क्षेत्र की सांस्कृतिक राजधानी लाहौर को जीतने के कगार पर ही था कि अपने लोगों ने ही धोखा दे दिया। विनोद सिंह के नेतृत्व में सैकड़ों योद्धा गुरदास नंगल की गढ़ी में लड़ाई के बीच में ही अलग हो गए। मुगल शासकों से जागीरें हासिल कर लीं। आज भी इतिहास बन्दा बहादुर की सेना और खालसा के बीच विवाद के कारणों को लेकर माथापच्ची होती रहती है, लेकिन इस पर सभी सहमत हैं कि यदि विनोद सिंह और उसके सैकड़ों साथी रणभूमि के बिल्कुल बीच में से बन्दा बहादुर को छोड़ कर न जाते तो शायद भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की कहानी उसी दिन से शुरू हो गई थी। बन्दा बहादुर ने लाहौर तक तो धावा बोल ही दिया था। वहां हलचल होने लगी थी। मुगल सत्ता का सिंहासन दिल्ली तक हिल गया था। मुगल बादशाह फर्रुखसियार को खुद मार्च करने के लिए मजबूर होना पड़ा था। लेकिन यह भारत माता का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि यहां घर को आग घर के ही कुछ लोग लगा देते हैं। गुरदास नंगल की गढ़ी में जब उसके सैकड़ों साथी इतिहास के उस मोड़ पर उसे छोड़ कर चले गए तो बन्दा बहादुर के पास भी विकल्प बचता था। वह भी वहां से पलायन कर सकता था। लेकिन उसने दशम गुरु गोविन्द सिंह जी को वचन दिया था कि वह अत्याचारी मुगल सत्ता को उखाड़ फेंकेगा। ऐसा उसने किया भी। उसने जो नई स्वदेशी राज्य व्यवस्था स्थापित की, उसे गुरु को ही समर्पित किया। स्वाधीन राज्य के जो सिक्के चलाए, उन पर दशम गुरु के सूत्र ही अंकित किए ताकि भावी पीढियां उससे प्रेरणा ले सकें। वह सत्ता के मोह में फंस कर उसके मद से ग्रस्त नहीं हुआ। यौवन काल में उसने जो वैराग्य धारण किया था, वैराग्य की वह भावना अब सत्ता प्राप्ति के बाद भी बनी रही। सत्ता से वैराग्य बनाए रखने का काम कोई साधक या तपस्वी ही कर सकता है। शायद यही कारण था कि मुगल सत्ता को उखाड़ फेंकने और स्वदेशी सत्ता स्थापित करने का यज्ञ उसने वर्तमान हरियाणा के खरखौदा में एक वैरागी आश्रम से ही प्रारम्भ किया था। वह आश्रम आज भी विद्यमान है। अब फिर गुरदास नंगल की उसी गढ़ी को लौटें जिसको मुगलों की विशाल सेना ने घेर रखा है। जहां सप्त सिन्धु का इतिहास लिखा जा रहा है। विनोद सिंह छोड़ कर जा चुका है। बन्दा बहादुर के कुछ साथी उसके साथ अब तक भी खड़े हैं। गढ़ी के अन्दर खाद्य सामग्री समाप्त हो गई है। घोड़े भूख से मर रहे हैं। पानी की कमी है। ये सैनिक भारतीय इतिहास के सात सौ नक्षत्र हैं जो सदा चमकते रहेंगे। बन्दा बहादुर जानता है कि कर्म करने का अधिकार उसके पास है।

संलेखना में उपवास से कर्मों, कषायों और शरीर को कृष किया जाता हैं:आचार्य

जयपुर (विश्व परिवार)। आचार्य श्री वर्धमान सागर जी दंग की नसिया विराजित हैं जयपुर गौरव मुनिश्री 108 प्रभास सागर जी महाराज के आजीवन अन्न त्याग के उपरांत आजीवन फल एवं छह रसों के त्याग के महामहोत्सव के उपलक्ष्य में भव्य वर्धमान सागर महामंडल विधान का आयोजन मुनिश्री 108 प्रभास सागर जी महाराज के अद्वितीय तप, त्याग एवं संयम की अनुमोदना के पावन अवसर पर उनके



संपन्न किया गया। मंडल विधान की सुंदर रचना पंडित कीर्तिश पारसोला द्वारा की गई। विधान के मंत्रोच्चार मुनि श्री हितेन्द्र सागर जी एवं अजय जैन पंचोलिया सनावद के सुमधुर स्वर लहरियों से नृत्य भक्ति मय वातावरण हुआ इस अवसर पर आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ने अपने आशीर्वचन में बताया कि मंडल विधान करने से पुण्य आश्रव,ओर कर्मों की निर्जरा होती है ।प्रत्येक धार्मिक अनुष्ठान में सभी को सम्मिलित होकर धर्म लाभ लेना चाहिए धार्मिक क्रियाओ से पुण्य में वृद्धि होकर पाप कर्मों का नाश होता है डॉ राजेश पंचोलिया के अनुसार आचार्य श्री ने आगे बताया कि इस समय मुनि प्रभास सागर , आर्यिका श्री सुदृष्टि मति एवं श्री निर्लेप मतीजी की संयम समाधि साधना चल रही है तीनों साधु शक्ति अनुसार व्रत उपवास कर कर्मों को नष्ट कर रहे हैं ।संलेखना में कर्मों और शरीर को कृष कमजोर किया जाता है। तीनो साधु क्रमश: यम संलेखना की ओर आगे बढ़ रहे है साधु व्रत नियम धारण कर धर्म कार्यों का पुरुषार्थ करते हैं आचार्य श्री ने प्रथमाचार्य श्री शांति सागर जी महाराज की अक्षुण्ण मूल परंपरा के सभी पूर्व आचार्य का गुणानुवाद कर बताया कि सभी आचार्य बाल ब्रह्मचारी रहे हैं उन्हीं के आदर्श सिद्धांतों पर वर्तमान में सभी साधु चल रहे हैं इस भव्य धार्मिक आयोजन में परिजन,श्रीमती तारा दादी,छोटू भैय्या,संगीता पंचोलिया ,निर्मला दीदी,शशि पाटनी,कीर्ति दीदी,एवं समाज के अनेक गणमान्य महानुभाव एवं धर्मप्रेमी बंधुओ की गरिमामय उपस्थिति रही । पूरे आयोजन में श्रद्धा, भक्ति एवं उल्लास का अद्भुत वातावरण रहा। सभी ने गुरु वंदना कर मुनिश्री के इस ऐतिहासिक तप एवं त्याग की हर्षोल्लासपूर्वक अनुमोदना की। यह महामहोत्सव जैन धर्म की तपस्या, त्याग, संयम एवं आत्मकल्याण की महान परंपरा का अनुपम उदाहरण बना।
डा राजेश पंचोलिया इंदौर

संतों के आशीर्वाद से ही देश को मिल रही सही दिशा, अंतर्मना की 'हर मास एक उपवास' मुहिम से बदलेगा समाज : सईद

औरंगाबाद (विश्व परिवार)। औरंगाबाद नरेंद्र पियुष जैन ईश्वर ने प्रत्येक मनुष्य को किसी न किसी उद्देश्य के साथ जन्म दिया है। यदि जीवन का कोई उद्देश्य नहीं है तो मनुष्य और पशु के जीवन में कोई अंतर नहीं रह जाता। मैंने अपने जीवन में अनेक साक्षात्कार किए हैं, लेकिन आज संतों से मिलकर ऐसा महसूस हुआ कि मेरे अब तक के साक्षात्कार अधूरे थे। देश को वास्तविक दिशा देने का काम हमारे संत कर रहे हैं। पहली बार ऐसा लगा कि अंतर्मना जैन संत का सच्चा और आत्मीय आशीर्वाद प्राप्त हुआ है। 'हर मास एक उपवास' अभियान केवल भोजन त्यागने की प्रेरणा नहीं देता, बल्कि क्रोध, वासना, लालच और जीवन के प्रत्येक विकार को दूर करने का मार्ग भी दिखाता है।



यह विचार प्रसिद्ध टीवी एंकर एवं आजतक के वरिष्ठ पत्रकार सईद अंसारी ने पुष्पगिरी तीर्थ में आयोजित 'हर मास, एक उपवास' के 12वें महाआयोजन में मुख्य वक्ता के रूप में व्यक्त किए। आयोजन अंतर्मना धार्मिक एवं पारमार्थिक ट्रस्ट तथा पतंजलि योगपीठ हरिद्वार के संयुक्त तत्वावधान में संपन्न हुआ।कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में परम पूज्य डॉ. संजय कृष्ण सलिल जी महाराज, कथा व्यास श्री तनयकृष्ण जी महाराज (पीठ श्री तुलसी रामायण भागवत, वृंदावन), श्रद्धेय सुलभ शांतु गुरुजी (श्री करुणाश्रय सेवा न्यास, उज्जैन), पतंजलि योगपीठ हरिद्वार के प्रवक्ता श्री एस.के. तिजारावाला तथा विद्या भारती के संघ प्रभारी श्री विष्णु आर्य उपस्थित रहे। अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। मुनि नेगम सागर जी महाराज ने मंगलाचरण किया।

जैन धर्मावलंबियों का नया साल हुआ शुरु

वीर निर्वाण सम्वत् 2553 का हुआ शुभारंभ-जैन संतों के चातुर्मास का हुआ निष्ठापन

जयपुर (विश्व परिवार)। सबसे प्राचीन संवत जैन धर्मावलम्बियों का नया साल वीर निर्वाण सम्वत् 2553 का कार्तिक शुक्ला एकम् मंगलवार, 10 नवम्बर से शुभारंभ हुआ। इस मौके पर जैन मंदिरों में पूजा अर्चना के विशेष आयोजन किये गये। नये साल की जैन धर्मावलंबियों ने आपस में एक दूसरे को बधाई दी। राजस्थान जैन युवा महासभा के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन 'कोटखावदा' ने बताया कि इससे पूर्व वीर निर्वाण सम्वत् 2552 का कार्तिक कृष्ण अमावस्या, सोमवार, 9 नवम्बर को समापन हो गया।श्री जैन के मुताबिक इसी दिन जयपुर में चल रहे 15 चातुर्मास स्थलों पर दिगम्बर जैन आचार्यों,मुनि, आर्यिकाओं, क्षुल्लक,



क्षुल्लिकाओं के चातुर्मास का निष्ठापन एवं वर्षायोग का समापन हुआ।कई स्थानों पर समारोह आयोजित किए गए।श्री जैन के मुताबिक इसी दिन आचार्य भरत सागर महाराज का 20 वां समाधि दिवस एवं सायंकाल भगवान महावीर के प्रथम गणधर गौतम स्वामी का केवल ज्ञान दिवस मनाया गया। इस मौके पर कई साधु संतों द्वारा संयम का उपकरण पिच्छिका परिवर्तन भी किया गया।

नोएडा में 20 दिसंबर को सजेगा जैन प्रतिभाओं का सम्मान समारोह, देशभर के मेधावी छात्र-छात्राएं होंगे सम्मानित

नोएडा (विश्व परिवार)। जैन समाज की प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने, शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों का सम्मान करने तथा नई पीढ़ी को धर्म, संस्कार एवं सामाजिक मूल्यों से जोड़ने के उद्देश्य से आचार्य ज्ञानसागर अखिल भारतीय जैन छात्र-छात्रा प्रतिभा सम्मान समारोह 2026 का भव्य आयोजन किया जा रहा है। यह समारोह आगामी 19 एवं 20 दिसंबर 2026 को नोएडा के सेक्टर-74 स्थित वेडिंग क्राउन, सुपरटेक केपटाउन में आयोजित होगा।

कार्यक्रम अध्यक्ष सुनील जैन मोना जनरेटर के अनुसार परम पूज्य आचार्य श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज की प्रेरणा एवं परम पूज्य आचार्य श्री 108 ज्ञेय सागर जी महाराज के आशीर्वाद तथा गणिनी आर्यिका श्री 105 आर्षमति माताजी (ससंघ) के मंगल मार्गदर्शन एवं सानिध्य में भव्य आयोजन होगा।

प्रवक्ता सोनू जैनने अवगत कराया कि समारोह का मुख्य उद्देश्य जैन समाज के मेधावी एवं प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धियों को सम्मान देना है। प्रतिभाओं का सम्मान केवल पुरस्कार प्रदान करने तक सीमित नहीं होता, बल्कि इससे विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, सकारात्मक सोच और समाज के प्रति उत्तरदायित्व की भावना भी विकसित होती है।

समारोह में विभिन्न शैक्षणिक क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धियां अर्जित करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया जाएगा। इसके माध्यम से समाज की युवा पीढ़ी को शिक्षा, संस्कार, अनुशासन एवं सेवा के मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा मिल सकेगी।

दो दिवसीय आयोजन में होंगे विविध कार्यक्रम

आयोजन का प्रारम्भ शनिवार, 19 दिसंबर को धार्मिक एवं सांस्कृतिक



कार्यक्रमों के साथ होगी। इस दिन प्रात: 9 बजे से श्री भक्तामर महामंडल विधान एवं पूजन का कार्यक्रम होगा। इसके पश्चात दोपहर 3 बजे से करियर काउंसलिंग एवं सायंकाल 7 बजे से गुरुवर भक्ति एवं भजन संध्या का आयोजन होगा।

रविवार, 20 दिसंबर को प्रात: 9 बजे से धार्मिक विधान एवं पूजन के साथ कार्यक्रमों का शुभारंभ होगा। प्रात: 11 बजे से प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं का सम्मान समारोह आयोजित किया जाएगा तो सायंकाल 4 बजे से पिच्छिका परिवर्तन समारोह का आयोजन होगा। इन कार्यक्रमों में श्रद्धालुओं को धर्म, साधना एवं आध्यात्मिक जीवन के महत्व को समझने का अवसर मिलेगा।

धर्म, शिक्षा और संस्कारों का अनूठा संगम

गणिनी आर्यिका आर्ष मति माताजी ने कहा कि यह आयोजन केवल प्रतिभा सम्मान का मंच नहीं, बल्कि धर्म एवं शिक्षा के समन्वय का एक महत्वपूर्ण प्रयास है। वर्तमान समय में जहां युवा पीढ़ी के सामने शिक्षा, करियर और जीवन की अनेक चुनौतियां हैं, वहीं ऐसे आयोजन उन्हें अपनी सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विरासत से जोड़ने का कार्य करते हैं। करियर काउंसलिंग के माध्यम से विद्यार्थियों को भविष्य के प्रति जागरूक करने के साथ-साथ धार्मिक कार्यक्रमों के माध्यम से उनमें नैतिकता, संयम, विनम्रता एवं संस्कारों का संचार करने का प्रयास किया जाएगा।

आयोजन के दौरान लकी ड्रॉ एवं अन्य आकर्षक गतिविधियां भी रखी गई हैं।अखिल भारतीय ज्ञानार्ष भक्त परिवार जैन समाज, नोएडा आयोजन को सफल बनाने हेतु व्यापक तैयारियों में जुट गयी है।

कुण्डलगिरि पर्वतराज की भव्य परिक्रमा में उमड़ा आस्था का जनसैलाब

कुण्डलपुर (विश्व परिवार)। सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर में 12 से 16 नवंबर तक प्रतिमा व्रत विज्ञान एवं समाधि साधना शिविर का भव्य आयोजन किया जा रहा है। वीर निर्वाण संवत 2553 की प्रथम तिथि प्रतिपदा पर कुण्डलगिरि पर्वतराज की लगभग 10 किलोमीटर लंबी भव्य परिक्रमा पहली बार श्रद्धा, भक्ति और अभूतपूर्व उत्साह के साथ संपन्न हुई। दोपहर लगभग सवा बजे ज्ञानसाधना केंद्र से प्रारंभ हुई इस ऐतिहासिक परिक्रमा में निर्यापक श्रमण मुनि श्री समतासागर महाराज, मुनि श्री पवित्रसागर महाराज ससंघ समस्त ऐलक-क्षुल्लक, ब्रह्मचारी भैया-बहन, दीदियां तथा हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने सहभागिता की। मुख्य मार्ग से कुण्डलपुर ग्राम से ग्रामीण क्षेत्र होते हुए पर्वतराज के परिक्रमा मार्ग से निकली यह यात्रा लगभग साढ़े चार बजे तीर्थक्षेत्र पहुंचकर संपन्न हुई। परिक्रमा मार्ग का दक्षिणी हिस्सा प्राकृतिक रूप से अत्यंत दुर्गम था, जिसकी अनुभूति सम्मेदशिखरजी की वंदना जैसी रही। मार्ग में जगह-जगह श्रद्धालुओं ने भक्ति और उत्साह के साथ मुनिसंघ का स्वागत किया। ग्रामीणों ने रंगोली सजाकर, दीपक प्रज्वलित कर तथा जल



अध्यक्ष, महामंत्री एवं अन्य पदाधिकारियों ने चरण प्रक्षालन कर पुण्यार्जन किया। श्रद्धालुओं के लिए फल, मिठाई और पेयजल की व्यवस्था की गई। इस आयोजन की प्रेरणा आचार्य श्री विद्यासागर महाराज के आशीर्वाद तथा आचार्य श्री समयसागर महाराज के मार्गदर्शन से प्राप्त

अतिसहकारी पुण्य के बीच का अंतर स्पष्ट करते हुए कहा कि सामान्य पुण्य व्यक्ति को संसार के सुख-साधन और वैभव उपलब्ध कराता है, जबकि अतिसहकारी पुण्य सांसारिक कार्यों की पूर्ति करने के साथ मोक्षमार्ग को भी प्रशस्त करता है। सामान्य पुण्य जहां संसार की सुख-सुविधाओं का कारण बनता है, वहीं अतिसहकारी पुण्य परमार्थ की दिशा में आगे बढ़ने का अवसर प्रदान करता है।महाराज श्री ने कहा कि दोनों प्रकार के पुण्य में मूल अंतर व्यक्ति के भाव, उसकी दृष्टि और धर्म के प्रति उसकी समझ का है। उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि कोई व्यक्ति केवल दया के भाव से दूसरों की मदद करता है, बीमारों, वृद्धों और विकलांगों की सेवा करता है, चैरिटी करता है, लेकिन वह पात्र-अपात्र का विचार नहीं करता और न ही अपने कार्य के फलाफल पर विचार करता है। उसका भाव केवल इतना होता है कि मुझे दूसरों की सहायता करनी है, आगे उसका जो परिणाम हो, देखा जाएगा। ऐसा व्यक्ति यदि तत्त्वज्ञान, धर्मज्ञान, पुण्य-पाप की समझ, आत्मा-परमात्मा के स्वरूप और सम्यक दर्शन से अनभिज्ञ है, तब भी उसके सेवा और सहयोग के भाव से पुण्य का बंध होता है, लेकिन यह पुण्य मुख्य रूप से संसार के सुख-साधन और सुविधाएं उपलब्ध कराने वाला होता है। उन्होंने स्पष्ट किया कि केवल सेवा करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि सेवा के पीछे हमारी दृष्टि और भावना कैसी है, यह भी महत्वपूर्ण है। जब व्यक्ति तत्त्वज्ञान को समझकर, विवेकपूर्वक, पात्रता का विचार करते हुए और सम्यक दृष्टि के साथ परोपकार करता है, तब उसका पुण्य परमार्थ की दिशा में भी सहायक बनता है। अतिसहकारी पुण्य व्यक्ति को सांसारिक वैभव के साथ धर्म और आत्मकल्याण की ओर बढ़ने की प्रेरणा देता है। महाराज श्री ने संदेश दिया कि दया, करुणा और सेवा के कार्य अवश्य करने चाहिए, लेकिन उनके साथ तत्त्वज्ञान, विवेक और सम्यक दृष्टि का समन्वय भी आवश्यक है। यही सामान्य पुण्य को अतिसहकारी पुण्य की दिशा में ले जाने का आधार बनता है। राष्ट्रीय प्रवक्ता अविनाश जैन 'विद्यावाणी' एवं क्षेत्र प्रचारमंत्री जयकुमार जैन 'जलज' ने बताया कि सिद्धभूमि कुण्डलगिरि पर्वतराज की यह ऐतिहासिक परिक्रमा श्रद्धालुओं के लिए अविस्मरणीय आध्यात्मिक अनुभव बनी। मुनिसंघ की मंगल सन्निधि में हजारों श्रद्धालुओं ने पर्वतराज की वंदना कर धर्मलाभ प्राप्त किया। महाराज श्री ने इस परिक्रमा को प्रतिवर्ष कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा पर आयोजित करने की भावना भी व्यक्त की ।

रायपुर कार्पोरेशन वालीबॉल संघ के चयनित खिलाड़ियों को दी गई शुभकामनाएं

- सोमवार को - जैन मंदिरों में गूंजेगे भगवान महावीर के जयकारे

रायपुर (विश्व परिवार)। 21वीं सीनियर छत्तीसगढ़ स्टेट इंटर डिस्ट्रिक्ट वालीबॉल चैंपियनशिप (पुरुष एवं महिला)-2026 का आयोजन दिनांक 12 से 15 नवंबर 2026 तक ह्रङ्कक्ष्ट, लारा, जिला रायगढ़ में किया जा रहा है। इस राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में रायपुर कार्पोरेशन वालीबॉल संघ की पुरुष एवं महिला टीमों का चयन किया गया है। चयनित खिलाड़ियों की सूची निम्नानुसार है।पुरुष टीम के चयनित खिलाड़ी:-अभय सिंह तोमर, आयुष, आजाद सिंह, मयंक पोड़ेटी, दुन्ना शिवा राव, ओमकार साहू, दुर्गेश साहू, दक्ष कंवर, आर्यन खंडेलवाल, बादल



नायक एवं अजय मिश्रा।

महिला टीम की चयनित खिलाड़ी:-किरण साहू, पुष्पा, लावण्या गुप्ता, संध्या रामटेके, अपर्णा यादव, ऐश्वर्या पाटिल, एकता वर्मा (तिल्दा), सुंदरी पोर्ते (तिल्दा), पायल वर्मा (तिल्दा), शिखा (तिल्दा), डॉली वर्मा (तिल्दा), वसुंधरा मंडावी (तिल्दा), भूमिका वर्मा (तिल्दा) एवं रुचिका सरवा (तिल्दा)।

पुरुष टीम के कोच श्री दुर्गा प्रसाद पटनायक एवं सहायक कोच श्री हर्ष देशमुख तथा महिला टीम के कोच श्री योगेश्वर एवं मैनेजर श्रीमती हेमलता यादव के मार्गदर्शन में दोनों टीमें कल गोंडवाना एक्सप्रेस से रायगढ़ के लिए रवाना होंगी। संघ के अध्यक्ष श्री हेम प्रकाश नायक, उपाध्यक्ष श्री अनुराग राठी एवं श्री रमाकांत निषाद, सचिव श्री संतोष सिंह, कोषाध्यक्ष श्री जितेंद्र सिंह, संयुक्त सचिव श्री मार्तंड सिंह एवं श्री मंगलेश्वर सिंह, श्री पंकज नायक श्री सुनील शर्मा, श्री अनिल सिंह सहित समस्त पदाधिकारियों ने चयनित खिलाड़ियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं।संघ को पूर्ण विश्वास है कि दोनों टीमें खेल भावना, अनुशासन एवं टीम भावना के साथ अपना सर्वश्रेष्ठ

भगवान महावीर के 2553वें निर्वाण महोत्सव पर बहोरीबंद में हुआ आयोजन

जबलपुर। भगवान महावीर स्वामी के 2553वें निर्वाण महोत्सव एवं वीर निर्वाण नववर्ष के शुभारंभ के अवसर पर निर्ग्रन्थ सेंटर ऑफ आर्कियोलॉजी की जबलपुर सर्किल इकाई द्वारा बहोरीबंद में विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर संस्था के सदस्यों ने दीपावली के पावन पर्व पर भगवान महावीर के निर्वाण कल्याणक का स्मरण करते हुए नववर्ष का उत्सव मनाया और एक-दूसरे को मंगलमय नववर्ष की शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम में संस्था के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. यतीश जैन ने वीर निर्वाण संवत् की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक पृष्ठभूमि पर विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि जैन परंपरा के अनुसार भगवान महावीर का निर्वाण दीपावली के दिन हुआ था और इसी पावन तिथि से वीर निर्वाण संवत् की गणना प्रारंभ मानी जाती है। इस दृष्टि से दीपावली केवल प्रकाश पर्व ही नहीं, बल्कि भगवान महावीर के निर्वाण की स्मृति और जैन समाज के नववर्ष का भी महत्वपूर्ण अवसर है। उन्होंने बताया कि दीपावली के



पश्चात ही परंपरागत रूप से व्यापारिक प्रतिष्ठानों में नए बही-खाते खोलने, पुराने लेखे का समापन करने तथा नए वित्तीय एवं व्यापारिक वर्ष का शुभारंभ करने की परंपरा रही है। व्यापारी वर्ग द्वारा शुभ मुहूर्त में नवीन बही-खातों का पूजन कर नए वर्ष का लेखा-जोखा प्रारंभ किया जाता है। यह परंपरा भारतीय समाज में दीपावली और नववर्ष के ऐतिहासिक एवं आर्थिक महत्व को भी दर्शाती है।डॉ. जैन ने राजस्थान के अजमेर जिले के बड़ली (वडाली) ग्राम से प्राप्त प्राचीन शिलालेख का उल्लेख करते हुए बताया कि ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण यह अभिलेख वीर निर्वाण कालगणना के ऐतिहासिक अध्ययन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। इतिहासकार गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने वर्ष 1912 में इस शिलालेख की खोज की थी। इसके पाठ में 'वीराय भगवते' तथा 'चतुरासिति' शब्दों के आधार पर उन्होंने इसे भगवान महावीर के निर्वाण के 84वें वर्ष से संबंधित माना था। इस अभिलेख ने भगवान महावीर और प्राचीन भारतीय कालगणना के ऐतिहासिक अध्ययन को महत्वपूर्ण आधार प्रदान किया। उन्होंने कहा कि ऐसे पुरातात्विक साक्ष्यों के माध्यम से हमारी प्राचीन धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं को समझने का अवसर मिलता है।

उन्होंने भगवान महावीर के अहिंसा, अनेकांत, अपरिग्रह एवं जीवदया के सिद्धांतों को वर्तमान समय में भी प्रासंगिक बताते हुए कहा कि नववर्ष का वास्तविक उद्देश्य केवल उत्सव मनाना नहीं, बल्कि उनके आदर्शों को जीवन में अपनाना और समाज में शांति, सद्भाव, नैतिकता एवं समरसता को बढ़ावा देना है। इस अवसर पर जबलपुर सर्किल इकाई के श्री कनिल जी, कपिल जैन, डॉ. ज्योति जैन, संगीता जैन, रचना जैन, सिंपल जैन, मालती जी, आदित्य जैन, राज जैन, अदिति जैन, कल्प जैन, कनिष्क, आयुष सहित अनेक सदस्य उपस्थित रहे। सभी ने परस्पर नववर्ष की शुभकामनाएं देते हुए भगवान महावीर के सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार तथा प्राचीन ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक धरोहरों के संरक्षण का संकल्प व्यक्त किया।

छग स्वतंत्रता सेनानी उत्तराधिकारी संस्था के जिलाध्यक्ष विजय केसरवानी एवं उपाध्यक्ष रमेश बने

बलौदा बाजार (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ स्वतंत्रता सेनानी उत्तराधिकारी संस्था के प्रदेश अध्यक्ष श्री सुनील कुमार बाजारी द्वारा बलौदा बाजार जिला स्वतंत्रता सेनानी उत्तराधिकारी संस्था का जिलाध्यक्ष श्री विजय केसरवानी एवं जिला उपाध्यक्ष श्री रमेश मिश्रा को मनोनीत किया गया। तथा जिला संस्था के अन्य पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी के गठन हेतु जिला अध्यक्ष को अधिकृत किया गया।प्रदेश अध्यक्ष द्वारा संस्था के नियम 12(5) के अंतर्गत आम सभा में प्रस्तावित बलौदा बाजार जिला शाखा का गठन 3 वर्षों के लिए किया गया है, तथा जिला शाखा का शीघ्र विस्तार करने का आग्रह किया है।



नवनियुक्त जिला अध्यक्ष विजय केसरवानी एवं उपाध्यक्ष रमेश मिश्रा ने अपने मनोनयन हेतु प्रदेश अध्यक्ष के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि आरंभ में जिले के सभी स्वतंत्रता सेनानी परिवार के सदस्यों के सदस्यता फार्म भरे जाएंगे तथा जिले के स्कूल एवं अन्य सरकारी भवनों के नामकरण सेनानियों के नाम पर किए जाने हेतु प्रस्ताव तैयार कर कलेक्टर के माध्यम से शासन को भेजे जाएंगे। साथ ही यह भी सुनिश्चित किया जाएगा कि स्वतंत्रता दिवस एवं गणतंत्र दिवस समारोह सहित सभी शासकीय सार्वजनिक कार्यक्रमों में सेनानी परिवार को सम्मान पूर्वक आमंत्रित किया जाए।

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे
इंजीनियरिंग कार्य हेतु ई-निविदा सूचना

(1) निविदा सूचना संख्या ई-आर-टी-112-26-27, दिनांक: 06.11.2026.
कार्य का नाम: रायपुर स्टेशन के लाइन नंबर 1, 3, 5 और 6 के वॉशेबल एप्रन को सामान्य बलास्टेड ट्रैक में रूपांतरण करने का कम्पोजिट वर्क्स (सिविल और पी.वे.)।
निविदा मूल्य: ₹ 14,87,70,402/-. ईएमडी: ₹ 29,75,400/-.
निविदा जमा करना: 01.12.2026 के 11.00 बजे तक। निविदा खुलना: 01.12.2026 को 11.00 बजे।
विस्तृत विवरण/निविदा दस्तावेज की खरीद, पात्रता मानदंड एवं उपरोक्त कार्य के पूर्ण विवरण हेतु कृपया वरिष्ठ मंडल इंजीनियर/समन्वय/दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, रायपुर के कार्यालय से संपर्क करें अथवा हमारे वेबसाइट www.ireps.gov.in पर उपलब्ध निविदा दस्तावेजों का अवलोकन/डाउनलोड करें।
कृते वरिष्ठ मंडल अभियंता(I)/
PR/R/Engg/PCN/258 रायपुर
South East Central Railway @secrail

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

कैरियर

रायपुर, गुरूवार 12 नवंबर 2026



जमाना ऑनलाइन लर्निंग का

आज के दौर में आनलाइन लर्निंग का क्रेज बढ़ता जा रहा है। आप भी अपने पीसी या लैपटॉप के सामने बैठकर और इंटरनेट से जुड़कर पढना चाहते हैं, तो आनलाइन-लर्निंग एक बेस्ट आप्शन हो सकता है। कुछ बातों को ध्यान में रखकर ऑनलाइन पढाई कर सकते हैं। इससे आप कॉलेज में अटेंडेंस के चक्कर से भी बच जाएंगे। बस आपको ध्यान रखनी होगी डेट लाइन की। खास बात यह कि ऑनलाइन कोर्स के जरिए सर्टिफिकेट कोर्स का प्रचलन तेजी से बढ़ रहा है।

क्या कहते हैं एक्सपर्ट्स

एलसीबीएस के फाउंडर एंव सीईओ अभय गुप्ता बताते हैं किसी भी विषय के कोर्स कितने महंगे होते जा रहे हैं। लेकिन ऑनलाइन कोर्स के शुरू होने से आज आप घर बैठे ही अपने मोबाईल या कंप्यूटर पर इंटरनेट के माध्यम से बड़े बड़े कॉलेज और यूनिवर्सिटी में होने वाले कोर्स कर सकते हैं।

कोर्स का विवरण

एक महीने की अवधि वाले इस नए कोर्स ऑनलाइन लग्जरी मैनेजमेंट को शुरू करने का मुख्य कारण स्टूडेंट को लग्जरी मैट्रिक्स की जटिलताओं को आसानी से समझाना और लग्जरी के उद्योग में मंदी के दौर में भी स्टूडेंट्स के करियर को एक अच्छा ट्रैक देना है। वहीं दूसरे कोर्स एग्जीक्यूटिव डिप्लोमा इन लग्जरी मैनेजमेंट जिसकी अवधि 6 महीने है, जिससे स्टूडेंट भारतीय लग्जरी उद्योग के अनुभवी विशेषज्ञों और यूरोप के लग्जरी एक्सपर्ट्स और प्रोफेसर द्वारा दुनिया भर में लग्जरी व्यापार के विभिन्न पहलुओं को समझने के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण मिल रहा है। यह कोर्सेज युवाओं के लिए एक अच्छे करियर के रूप में बन सकते हैं।

योग्यता

इस कोर्स में एडमिशन लेने के लिए छात्र-छात्राओं का ग्रेजुएट होना जरुरी है। साथ ही स्टूडेंट की लग्जरी और मैनेजमेंट में दिलचस्पी भी होनी बेहद जरुरी होती है। इसके अलावा वो छात्र-छात्राएं जिनकी पर्सनालिटी और कम्यूनिकेशन स्किल्स अच्छी है और अंग्रेजी में अच्छी पकड़ है, वो इस क्षेत्र में एक सफल तौर पर अपना करियर बना सकते हैं। कोई एक विदेशी भाषा की जानकारी लाभदायक साबित हो सकती है पर यह अनिवार्य नहीं है।

अवसर

ऑनलाइन कोर्स इन लग्जरी ब्रांड मैनेजमेंट और एग्जीक्यूटिव डिप्लोमा इन लग्जरी मैनेजमेंट कोर्स करने वाले स्टूडेंट्स लग्जरी सेल्स एडवाइजर, मार्केटिंग मैनेजर, ब्रांड कंट्री हेड, विजुअल मर्चेडाइजर, लग्जरी इवेंट प्लानर, ब्रांड मैनेजर बन सकते हैं। फैशन और लग्जरी कंसल्टेंट या वार्डरोब मैनेजर के तौर पर भी काम पा सकते हैं।
वेतन - इस कोर्स के पूरा होने के बाद स्टूडेंट्स लग्जरी की इंडस्ट्री में अलग-अलग कंपनियों में इंटर्नशिप के लिए आवेदन कर सकते हैं, जिसमें बतौर स्टा-इपेंड 20 से 22 हजार रुपए मिलते। अगर आप जॉब के लिए जाते हैं तो शुरूआती सैलरी प्रति माह 30,000 रु. से 40,000 रु. के बीच हो सकती है।



फोरेंसिक साइंस के प्रति बढ़ा युवाओं का रुझान

फोरेंसिक साइंस एक अप्लाइड साइंस है। अपराधियों का पता लगाने के लिए इस में वैज्ञानिक सिद्धांतों व तकनीक का प्रयोग किया जाता है। इस कार्य में सहायक होते हैं अपराध स्थल से मिले साक्ष्य। आधुनिकता के साथ अपराध के तरीके बढ़े हैं, तो छानबीन के तरीके भी ईजाद हुए हैं। युवाओं का इस फील्ड के प्रति रुझान बढ़ा है।

देश में दिन प्रतिदिन अपराधों का ग्राफ बढ़ता ही जा रहा है। यदि देश का युवा चाहता है कि उसका देश, राज्य या शहर अपराधमुक्त हो तो उसे अवश्य ही फोरेंसिक साइंस के क्षेत्र में अपना कॅरियर बनाना चाहिए। युवाओं के लिए यह क्षेत्र अत्यंत ही रोमांचकारी एवं आह्वनात्मक है। इस क्षेत्र में युवा अपनी पहचान बनाकर नाम कमा सकते हैं। हमें युवाओं को सबसे पहले ये बताना होगा कि फोरेंसिक साइंस है क्या? और कैसे वह रोमांचकारी और आह्वनात्मक होता है। उदाहरणार्थ किसी घटनास्थल पर कोई वारदात होती है और वारदात को अंजाम देने वाले अपराधी को पकड़ पाना आसान नहीं होता तो उसे घटना स्थल की छोटी से छोटी वस्तु को भी इस साइंस की प्रयोगशाला में जांचा परखा जा सकता है और अपराधी तक पहुंचा भी जा सकता है। अपराधी को सजा दिलाने के लिए गवाही की आवश्यकता होती है और कई बार घटनास्थल पर इसका होना संभव नहीं हो पाता ऐसी अवस्था में घटनास्थल का मुआयना कर साक्ष्य जुटाने का प्रयत्न यह फोरेंसिक साइंस करता है। फोरेंसिक साइंस विज्ञान की ही एक व्यवहारिक शाखा है। इस सांइस के द्वारा अपराधी के शोध से संबंधित छोटी से छोटी वस्तु का भी परीक्षण प्रयोगशाला में कर अपराधी को तलाशने का प्रयास किया जाता है। इसमें आधुनिक तंत्र ज्ञान का वापर किया जाता है। घटनास्थल पर अपराधी जब घटना को अंजाम देता है तो उस वक्त वहां वह कोई न कोई वस्तु अवश्य छोड़ जाता है मसलन रक्त, शारीरिक द्रव्य, नाखून, बाल, हाथ या पैरों के निशान इत्यादि इन सबका परीक्षण फोरेंसिक साइंस की प्रयोगशाला में किया जाता है और आरोपी तक पहुंचने का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है।

इस प्रकार इस विज्ञान का महत्व अपराध जगत के लिए बहुत अधिक समझा और जाना जाता है। इस क्षेत्र में दाखिल होने के लिए युवाओं को बारहवीं कक्षा में विज्ञान से संबंधित विषय लेने होते हैं। जब बारहवी उत्तीर्ण हो तो इस शाखा में प्रवेश लेकर उपाधि ग्रहण की जा सकती है। ऐसे युवा जिन्होंने उपाधि में विज्ञान से संबंधित विषय जैसे भौतिक शास्त्र, रसायनशास्त्र, वनस्पति शास्त्र, प्राणीशास्त्र, जैविक रसायनशास्त्र, सूक्ष्मजीवशास्त्र, बीफार्मा, या बीडीएस को भी इस क्षेत्र में दाखिल होने के अवसर प्राप्त है। इस क्षेत्र में पुलिस विशेषज्ञ, फिंगर प्रिंट एक्सपर्ट, व इन्वेस्टिगेटिंग आफिसर व पूरी न्याय संख्या से संबंधित पद होते हैं जिसमें दक्षता प्रमाणित करने व मान-प्रतिष्ठा मिलाने के लिए अपार संभावनाएं हैं। अपराध के बढ़ते ग्राफ को देखते हुए निजी गुप्तचर भी फोरेंसिक साइंस वालों को अच्छा अवसर प्रदान करने लगे हैं। इस क्षेत्र में यदि युवा दाखिल होने का इच्छुक है तो उसे अनिवार्य योग्यता हासिल कर लेने के पश्चात स्टेट पब्लिक सर्विस कमीशन द्वारा आयोजित परीक्षाओं में सफल होना आवश्यक होता है। उस परीक्षा में जो अभ्यार्थी सफलतापूर्वक उत्तीर्ण होते हैं उन्हें तुरंत नियुक्ति मिल जाती है।

चुनौतियों भरा

यह प्रोफेशन चुनौतियों भरा है। इसलिए इस करियर में आना है, तो चुनौतियों से निपटना आना चाहिए। किसी केस को निपटाने के लिए कभी-कभी असफलता भी हाथ लगती है, तो ऐसे में धैर्य नहीं खोना चाहिए और उस केस को चुनौती के तौर पर लेना चाहिए। जांच-पड़ताल का क्षेत्र है, तो जाहिर सी बात है कि दोस्त कम होंगे और दुश्मन ज्यादा बन जाएंगे, तो इस बात से भी भयभीत होने की चुनौती भी इस करियर में है। हर स्थिति से निपटने की चुनौती स्वीकार करने वाला ही इसमें सफल होता है।

वेतनमान

गवर्नमेंट संस्थान में नौकरी मिलने पर इस क्षेत्र में आरंभिक दौर में 20 हजार रुपए प्रतिमाह तक वेतन मिलता है। इस के अलावा प्राइवेट सेक्टर में भी इस जॉब में अच्छा सैलरी पैकेज मिलता है।
देश में अनेक विश्वविद्यालय और शैक्षणिक संस्थान इस फोरेंसिक साइंस के अभ्यासक्रम को संचालित करते हैं लेकिन उनमें कुछ चुनिंदा संस्थान है जहां से पास आउट विद्यार्थियों ने इस क्षेत्र में प्रवेश के लिए बाजी मारी है।





लॉन्ड्री व्यवसाय में भी अच्छे अवसर

आज शहरों में अनेक आलीशान होस्टल्स, होटल और अनेक वसतीगृह खुल गए हैं जिससे लॉन्ड्री व्यवसाय को बल मिल रहा है। इस व्यवसाय को चलाने के लिए दूसरे अन्य व्यवसायों जैसी लागत भी नहीं लगती। इसका खर्च सहजता से किया जा सकता है। जगह के नाम पर 300 से 500 वर्गफीट की आवश्यकता होती है। मशीन का मूल्य तीन से पांच लाख रुपए होता है और कामगार के नाम पर 2 से 4 नौकर धुलाई के लिए रखे जा सकते हैं। कपड़ों की धुलाई को ध्यान में रखें तो इस मशीन से रोजाना सत्तर से सौ किलो कपड़े धोए जा सकते हैं। और रोजाना कमाई आठ से दस हजार रुपए अपेक्षित होती है।

एक जमाना था जब हम कपड़ों को धोने के लिए रजक, परीट या धोबी के भरोसे रहते थे, परन्तु आज इस इक्कीसवी सदी में कपड़ों की धुलाई के लिए मशीनें उपलब्ध हैं जिसे हम लॉन्ड्री व्यवसाय के नाम से जानते हैं। आज महानगरों में ही नहीं तो गांवों, शहरों में भागमभाग की जिन्दगी है। समय का अभाव है। ऐसे में उस व्यवसाय में कैरियर के लिए बहुत अच्छे चांसेस है।

आज जिस भारत को हम कृषिप्रधान देश के नाम से जानते थे। जिसकी 75 प्रतिशत आबादी गांवों में ही वास करती थी। उस भारत का सपाटे से शहरीकरण और व्यवसायीकरण हो रहा है और एक अनुमान के अनुसार, 2027 तक देश की कल 60 प्रतिशत जनता शहरों में बसेगी। ऐसे में इस व्ययसाय के रूप में आगे चलकर और भी वृहद होने वाला है। आज पति-पत्नी दोनों ही या तो नौकरी में हैं या व्यवसाय में। इसलिए कपड़ों की धुलाई प्राय- लॉन्ड्री में ही होती है। एक सर्वेक्षण से ये सत्य सामने आया है कि देश के तीन करोड़ श्रीमंत लोग अपनी धुलाई और आयरन के लिए लॉन्ड्री में देते हैं। औसतन यदि हम खर्च देखें तो एक परिवार का प्रति माह एक हजार रुपए कपड़े धुलाई और आयरन पर खर्च होता है। आज शहरों में अनेक आलीशान होस्टल्स, होटल और अनेक वसतीगृह खुल गए हैं जिससे लॉन्ड्री व्यवसाय को बल मिल रहा है। इस व्यवसाय को चलाने के लिए दूसरे अन्य व्यवसायों जैसी लागत भी नहीं लगती। इसका खर्च सहजता से किया जा सकता है। जगह के नाम पर 300 से 500 वर्गफीट की आवश्यकता होती है। मशीन का मूल्य तीन से पांच लाख रुपए होता है और कामगार के नाम पर 2 से 4 नौकर धुलाई के लिए रखे जा सकते हैं। कपड़ों की धुलाई को ध्यान में रखें तो इस मशीन से रोजाना सत्तर से सौ किलो कपड़े धोए जा सकते हैं। और रोजाना कमाई आठ से दस हजार रुपए अपेक्षित होती है।

इसका सबसे बड़ा ग्राहक रेल्वे है। उसके बाद बड़े-बड़े पाश हॉस्पिटल्स, होटल्स, स्कूल कॉलेजों के होस्टल्स और अनेक रईस परिवार हैं। धुलाई का कोई तोटा नहीं है कहें तो शायद कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। आज की लॉन्ड्रियां पूरी तरह नई तकनीक से सुसज्जित है। इस तकनीक ने इस व्यवसाय को हाईटेक बना दिया है। आपको एक फोन करने या मोबाईल एप पर मैसेज डालने की आवश्यकता है कि कुछ ही क्षणों में लॉन्ड्री का पिकअप ब्वाय आपके घर के दरवाजे पर हाजिर होता है।

आपको ये सारे कपड़े धोकर आयरन चलाकर और एक आकर्षक पैकिंग के साथ आपके घर पहुंचाए जाते हैं। इसमें सिर्फ तीन की अवधि लगती है। कभी-कभी तो लॉड्री के इस आकर्षक पैकिंग को देखकर तो ये भ्रम होने लगता है कि कहीं हमने नए कपड़ों की शॉपिंग तो नहीं की है। आज इस इक्कीसवीं सदी में मनुष्य का जीवन वेगवान है। भागमभाग की जिन्दगी में वह अपने कपड़ों की धुलाई और आयरन के लिए लॉन्ड्रियों पर ही निर्भर रहता है। आज शहर हो या गांव, महानगर की बात ही अलग है कोई भी व्यक्ति धोया कपड़ा बगैर आयरन के नहीं पहनता। आयरन कराना एक अनिवार्यता बन गई है। ऐसे में इस व्यवसाय से कोई भी मनुष्य इस लॉन्ड्री व्यवसाय से चालीस से पचास हजार तक का नफा कमाया जा सकता है। आप इस डिजिटल युग में इस व्यवसाय को किस तरीके से और कैसा बढ़ाया जाए ये उद्योजक पर निर्भर करता है। समय बदल गया है। तकनीक बदल गई। अब न तो परीट या रजक नजर आते और न ही धोबीघाट। आजकल इन सब का काम लॉन्ड्री व्यवसाय में वापरी जाने वाली आधुनिक मशीनें ही करती हैं।





कमाई का बढ़िया जरिया किचन गार्डन

सागसब्जियों का हमारे दैनिक भोजन में महत्वपूर्ण स्थान है। विशेषकर शाकाहारियों के जीवन में। आजकल लोगो को शुध्द सब्जी मिलना बहुत ही मुश्किल है इसलिए आप आपके घर के आंगन में, घर की छत पर या अगर आपके पास कोई जमीं है तो आप आसानी से सब्जी बगीचा (किचन गार्डन) बना सकते हैं, इससे आपको शुध्द सब्जियां भी मिलेंगी और साथ ही आप इन सब्जियों को बेच कर पैसे भी कमा सकते हैं !
सागसब्जी भोजन में ऐसे पोषक तत्वों के स्रेत हैं, हमारे स्वास्थ्य को ही नहीं बढ़ाते, बल्कि उसके स्वाद को भी बढ़ाते हैं। पोषाहार विशेषज्ञों के अनुसार संतुलित भोजन के लिए एक वयस्क व्यक्ति को प्रतिदिन 85 ग्राम फल और 300 ग्राम सागसब्जियों का सेवन करना चाहिए, परंतु हमारे देश में सागसब्जियों का वर्तमान उत्पादन स्तर प्रतिदिन, प्रतिव्यक्ति की खपत के हिसाब से मात्र 120 ग्राम है। इसलिए हमें इनका उत्पादन बढ़ाना चाहिए।

सब्जी बगीचा के लिए स्थल चयन

सब्जी बगीचा के लिए स्थल चयन में सीमित विकल्प है। हमेशा अंतिम चयन घर का पिछवाड़ा ही होता है जिसे हम लोग बाड़ी भी कहते हैं। यह सुविधाजनक स्थान होता है क्योंकि परिवार के सदस्य खाली समय में सागसब्जियों पर ध्यान दे सकते हैं तथा रसोईघर व स्नानघर से निकले पानी आसानी से सब्जी की क्यारी की ओर घुमाया जा सकता है। सब्जी बगीचा का आकार भूमि की उपलब्धता और व्यक्तियों की संख्या पर निर्भर करता है। सब्जी बगीचा के आकार की कोई सीमा नहीं है परंतु सामान्य रूप से वर्ग की अपेक्षा समकोण बगीचा को पसंद किया जाता है। चार या पांच व्यक्ति वाले औसत परिवार के लिए 1/20 एकड़ जमीन पर की गई सब्जी की खेती पर्याप्त हो सकती है।

बनाएं सब्जी बगीचा

स्वच्छ जल के साथ रसोईघर एवं स्नानघर से निकले पानी का उपयोग कर घर के पिछवाड़े में उपयोगी सागसब्जी उगाने की योजना बना सकते है। इससे एक तो एकित्रत अनुपयोगी जल का निष्पादन हो सकेगा और दूसरे उससे होने वाले प्रदूषण से भी मुक्ति मिल जाएगी। साथ ही, सीमित क्षेत्र में सागसब्जी उगाने से घरेलू आवश्यकता की पूर्ति भी हो सकेगी। सबसे अहम बात यह कि सब्जी उत्पादन में रासायनिक पदार्थों का उपयोग करने की जरूरत भी नहीं होगी। यह एक सुरिक्षत पद्धति है तथा उत्पादित सागसब्जी कीटनाशक दवाईयों से भी मुक्त होंगे।

पौधा लगाना को खेत तैयार करना

सर्वप्रथम 30-40 सेंटीमीटर की गहराई तक कुदाली या हल की सहायता से जुताई करें। खेत से पत्थर, झाडियों एवं बेकार के खरपतवार को हटा दें। खेत में अच्छे ढंग से निर्मित 100 किलोग्राम कृमि खाद चारों ओर फैला दें। आवश्यकता के अनुसार 45 सेंटीमीटर या 60 सेंमी की दूरी पर मेड़ या क्यारी बनाएं।

बीज की बुआई, पौध रोपण

सीधे बुआई की जाने वाली सब्जी जैसे ङ्क भिंडी, बीन एवं लोबिया आदि की बुआई मेड़ या क्यारी बनाकर की जा सकती है। दो पौधे 30 सेंटीमी की दूरी पर लगाई जानी चाहिए। प्याज, पुदीना एवं धनिया को खेत के मेड़ पर उगाया जा सकता है। प्रतिरोपित फसल, जैसे ङ्क टमाटर, बैगन और मिर्ची आदि को एक महीना पूर्व में नर्सरी बेड या मटके में उगाया जा सकता है। बुआई के बाद मिट्टी से ढककर उसके ऊपर 250 ग्राम नीम के फली का पाउडर बनाकर छिडक़ाव किया जाता है ताकि इसे चीटियों से बचाया जा सके। टमाटर के लिए 30 दिनों की बुआई के बाद तथा बैगन, मिर्ची तथा बड़ी प्याज के लिए 40-45 दिनों के बाद पौधे को नर्सरी से निकाल दिया जाता है। टमाटर, बैगन और मिर्ची को 30-45 सेंमी की दूरी पर मेड़ या उससे सटाकर रोपाई की जाती है। बड़ी प्याज के लिए मेड़ के दोनों ओर 10 सेंटीमी की जगह छोड़ी जाती है। रोपण के तीसरे दिन पौधों की सिंचाई की जाती है। प्रारंभिक अवस्था में इस प्रतिरोपण को दो दिनों में एक दिन बाद पानी दिया जाए तथा बाद में चार दिनों के बाद पानी दिया जाए। सब्जी बगीचा का मुख्य उद्देश्य अधिकतम लाभ प्राप्त करना है तथा वर्षभर घरेलू सागसब्जी की आवश्यकता की पूर्ति करना है। बगीचा के एक छोर पर बारहमासी पौधों को उगाएं। इससे इनकी छाया अन्य फसलों पर न पड़े तथा अन्य सागसब्जी फसलों को पोषण दे सकें। बगीचा के चारों ओर तथा आनेजाने के रास्ते का उपयोग विभिन्न अल्पावधि हरी सागसब्जी जैसे - धनिया, पालक, मेथी, पुदीना आदि उगाने के लिए किया जा सकता है।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

विविध

रायपुर, गुरूवार 12 नवंबर 2026



काली धारी और खड़ी कलगी वाली

बोहेमियन वैक्सविंग

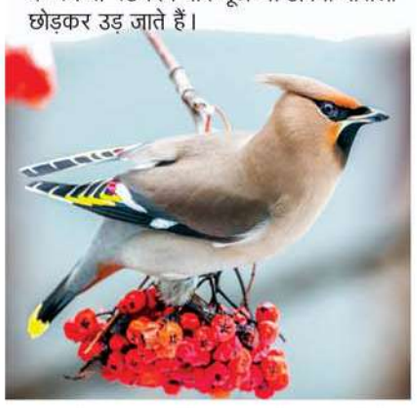
बादामी भूरा रंग, एकदम खड़ी कलगी और काली चोंच बाला सुंदर पक्षी है बोहेमियन वैक्सजिंग। इसका वैज्ञानिक नाम बॉबीसिला गैरूलस है। यह मैना के आकार की एक छोटी चिड़िया है जो 19 सेंटीमीटर से लेकर 23 सेंटीमीटर लंबी होती है। इसके पंखों का आयाम 32 से 35 सेंटीमीटर तक होता है और इसका वजन 55 ग्राम तक नापा गया है। ये पेली आर्कटिक क्षेत्र के उत्तरी जंगलों और उत्तरी अमेरिका के जंगलों में प्रजनन करते हैं। इनकी सीडार वैक्सबिंग और जापानी वैक्सविंग नाम की दो प्रजातियां और हैं जो एशिया, यूरोप, जापान, चाइना और रूस में पाई जाती है।

अल्कोहल भी पचा जाते हैं

मुख्य रूप से इसके पंख बादामी भूरे रंग के होते हैं। चेहरे पर काली धारी और एक स्पष्ट खड़ी कलगी इसकी खास पहचान है। शरीर के दोनों तरफ के उड़ने वाले पंख सफेद और गहरे पीले होते हैं जिनके सिरों पर लाल रंग के धब्बे पाए जाते हैं। इसी सीलिंग वैक्स के कारण इन्हें नाम मिला वैक्सविंग। बेरी, चेरी और अन्य रसीले फल पसंद करने वाले यह पक्षी फर्मेटेशन कर रहे फलों का अल्कोहल भी पी जाती हैं। इनमें अल्कोहल पचाने की क्षमता होती है। कभी-कभी इतनी अधिक मात्रा में पी लेते हैं कि मदहोश हो जाते हैं और खिड़कियों व इमारतों से टकराकर गर भी जाते हैं।

16 दिन बाद छोड़ देते हैं घोंसला

इनके प्रजनन आवास शंकुधारी पेड़ों के जंगल हैं जो पानी के किनारे पाए जाते हैं। नर-मादा मिलकर पेड़ों की शाखाओं पर एक कुपनुमा चिपका हुआ घोंसला बनाते हैं। एक बार में मादा 3 से 7 अंडे देती है। शुरुआत में चूजों को कीट-पतंगे खिलाए जाते हैं बाद में फलों का सेवन कराया जाता है। अंडों से निकलने के 14 से 16 दिन बाद चूजे भी अपना घोंसला छोड़कर उड़ जाते हैं।









भारत के अनोखे त्योहार
हर रिवाज़ों की अनकही कहानियां

भारत त्योहारों का देश है, जहां हर महीने, हर मौसम में कोई न कोई उत्सव मनाया जाता है। लेकिन क्या आप जानते हैं, यहां कई ऐसे त्योहार भी हैं, जिनके बारे में शायद आपने कभी सुना ही न हो? ये त्योहार न सिर्फ़ अपने अनोखे रिवाज़ों के लिए मशहूर हैं, बल्कि इनमें छिपी लोककथाएं भी आपको हैरान कर सकती हैं। कुछ त्योहार जहां रंग-बिरंगे कपड़े, गीत-संगीत और स्वादिष्ट पकवानों से भरपूर होते हैं, वहीं कुछ त्योहार अपनी अजीब परंपराओं और रहस्यमयी मान्यताओं के लिए जाने जाते हैं। जानते हैं ऐसे ही भारत के कुछ अनजाने त्योहारों के बारे में, जो आपको हैरानी और उत्सुकता दोनों से भर देंगे।

थेय्यम



केरल का थेय्यम त्योहार देखने लायक अनुभव है। इसमें कलाकार रंग-बिरंगे परिधानों और भव्य मेकअप के साथ देवताओं का रूप धारण करते हैं। यह सिर्फ़ नृत्य नहीं, बल्कि एक धार्मिक अनुष्ठान है, जिसमें दर्शकों को लगता है जैसे भगवान स्वयं धरती पर उतर आए हों। थेय्यम में संगीत, नृत्य और कथा-वाचन का अद्भुत मेल देखने को मिलता है।

फूलौंग देई



उत्तराखंड के गढ़वाल क्षेत्र में मनाया जाने वाला फूलौंग देई, वसंत ऋतु के आगमन का प्रतीक है। इस दिन बच्चे घर-घर जाकर फूल सजाते हैं और मिठाइयां बांटते हैं। यह त्योहार प्रकृति और समुदाय के बीच के गहरे संबंध को दर्शाता है। खास बात यह है कि इसे मनाने में किसी भव्य सजावट की जरूरत नहीं, बस प्रकृति की गोद से तोड़े गए रंग-बिरंगे फूल ही पर्याप्त हैं।

बोनालू



बोनालू तेलंगाना का एक प्रमुख त्योहार है, जो देवी महाकाली को समर्पित है। इस त्योहार के दौरान, महिलाएं देवी महाकाली की पूजा करती हैं और उन्हें बोनालू (भोग) चढ़ाती हैं। यह त्योहार आमतौर पर जून और जुलाई के महीने में मनाया जाता है और इसमें पूरे राज्य की महिलाएं भाग लेती हैं।

हेमिस फेस्टिवल

हेमिस फेस्टिवल लद्दाख का एक प्रमुख त्योहार है, जो बौद्ध धर्म के गुरु पद्मसंभव की जयंती के अवसर पर मनाया जाता है। इस त्योहार के दौरान, लोग हेमिस मठ में इकट्ठे होते हैं और गुरु पद्मसंभव की पूजा करते हैं। यह त्योहार आमतौर पर जून के महीने में मनाया जाता है और इसमें पूरे लद्दाख के लोग भाग लेते हैं।

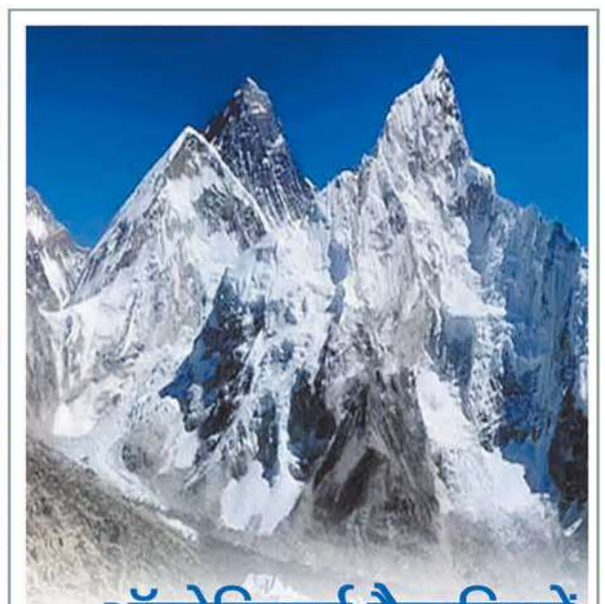


तिकोना है इस झील का आकार, कहते हैं इसे स्वर्ग का रास्ता

आपने अब तक कई झीलें देखी होगी। ये झीलें या तो गोल होती हैं या चौकोर लेकिन उत्तराखंड में एक ऐसी झील है जिसका आकार तिकोना है। इस अनोखे आकार की झील है संतोपंथ झील।

इस झील का अनूठापन केवल इसके आकार तक ही सीमित नहीं है बल्कि इससे जुड़ी मान्यताओं को रहस्यों से भी जुड़ा हुआ है। इस झील के तिकोने आकार के पीछे की कहानी कही जाती है कि ब्रह्मा, विष्णु और महेश ने एकादशी के दिन अलग-अलग कोने में डुबकी लगाई थी। इसलिए इसका आकार तिकोना है। इस झील को स्वर्ग की सीढ़ी भी कहा जाता है। धरती से स्वर्ग जाने का इसे रास्ता कहा जाता है। सतोपंथ के आगे पांच किमी दूर स्वर्गारोहिणी ग्लेशियर है और इस ग्लेशियस पर सीढ़ियां नजर आती है। मान्यता यह भी है कि महाभारत के काल में पांडवों ने स्वर्ग जाने से पहले इसी झील में स्नान किया था। कहा जाता है कि युधिष्ठिर को शरीर स्वर्ग जाने के लिए आकाशीय वाहन यहां से मिला था। आज के समय में यहां ट्रेकिंग के उद्देश्य पर्यटक पहुंचते हैं। यह झील समुद्रतट से 15 हजार फीट की ऊंचाई पर है।





ऑस्ट्रेलियाई वैज्ञानिकों का दावा, कभी धरती पर थे सुपरमाउंटेंस

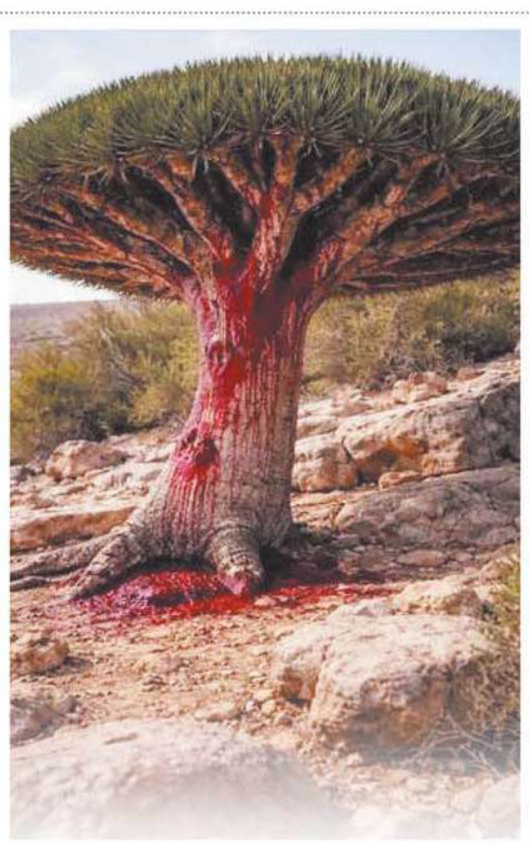
ऑस्ट्रेलिया के वैज्ञानिकों ने सुपरमाउंटेन की खोज की है। उन्होंने दावा किया है कि यह सुपरमाउंटेन हिमालय से भी 3 गुना बड़े थे। ऑस्ट्रेलिया के नेशनल यूनिवर्सिटी के शोधकर्ता जियी झू और उनके साथियों ने यह जांच की है। वैज्ञानिकों ने जिरकॉन्स के अवशेषों के जरिए इसकी जांच की है। कम ल्यूटेशियम वाला यह खनिज पदार्थ मिनरल और रेअर अर्थ मिलकर बनकर बनता है। यह विशाल पहाड़ों के नीचे दबाव वाले स्थान पर पाया जाता है। शोधकर्ताओं को रिसर्च के दौरान पता चला है कि सबसे पहले 2 से 1.8 अरब साल पहले तब सुपरमाउंटेन का निर्माण हुआ था जब नूना महाद्वीप जम रहा था। दूसरी बार 65 करोड़ से 50 करोड़ साल पहले सुपरमाउंटेन बना बना जब गोंडवाना महाद्वीप का निर्माण हुआ था। हालांकि वर्तमान में ऐसे कोई सुपरमाउंटेन नहीं हैं पर जियी झू का कहना है कि प्राचीन सुपरमाउंटेंस की रेंज 2400 किलोमीटर में फैले हिमालय से कई गुना अधिक थी।

सिर्फ दो ही देशों में खिलता है यह फूल



लाल गुलाब जैसा दिखने वाला यह फूल है 'मिडिलमिस्ट रेड'। इसे दुनिया का सबसे दुर्लभ फूल माना जाता है और उसकी वजह है कि यह पूरी दुनिया में सिर्फ दो ही जगहों (न्यूजीलैंड और ब्रिटेन) पर खिलता है। बता दें कि मिडिलमिस्ट रेड एक तरह का स्प्रिंग रोज यानी गुलाब का फूल है।

साल 1804 में जॉन मिडलमिस्ट नाम के एक शख्स ने इस फूल को चीन से लिया था और इंग्लैंड लेकर आए थे। उन्होंने अपने नाम पर इस फूल का नाम मिडिलमिस्ट रेड रखा। एक वक्त में यह फूल बेहद कीमती और दुर्लभ था। यह इंग्लैंड के उन अमीर लोगों के घर में ही पाया जाता था जो इसे खरीद सकते थे। उस वक्त इस फूल की कीमत 3 लाख रुपए से ज्यादा थी। मिडिलमिस्ट ने इस फूल को लंदन के कियू गार्डन में डोनेट किया था मगर ना जाने कैसे ये फूल वहां से गायब हो गया। साल 1823 तक ये फूल सिर्फ इंग्लैंड के चिस्विक हाउस और गार्डन में ही पाया जाने लगा। माना जाता है कि इस फूल का मूल देश चीन है जहां ये सबसे पहले पाया जाता था मगर आज तक इस बात को कोई नहीं जान पाया कि ये फूल चीन से पूरी तरह कैसे गायब हो गया। यह भी कोई नहीं जानता कि इस प्रजाति का एक फूल न्यूजीलैंड कैसे पहुंचा जहां ये खिलना शुरू हो गया और दो सदी से ज्यादा वक्त से वहां खिल रहा है। न्यूजीलैंड में ये फूल वैटांगी के ट्रीटी हाउस में खिलता है। यहां ये पहली बार साल 1833 में खिला था।



खून जैसा राल निकलता है इस पेड़ से, लोगों को चौंकाते हैं इसके आकार और उम्र

650 सालों तक जिंदा रहता है ड्रैगन ब्लड ट्री

ड्रैगन ब्लड ट्री एक आकर्षक और रहस्यमय पौधा है जो सोकोट्रा द्वीप समूह के बेमिसाल इकोसिस्टम में पनपता है. इन पेड़ों की विशेषता इसकी छतरी के आकार का ऊपरी हिस्सा और मोटी, चिकना तना है जो हरी पत्तियों के घने समूह में फैलता है. पेड़ की आकर्षक मौजूदगी और इसके आसपास की लोककथाओं ने इसे वनस्पति विज्ञानियों और प्रकृति प्रेमियों के लिए रोचक बना दिया है.

यमन के सोकोट्रा द्वीपसमूह पर पाए जाने वाले 'ड्रैगन ब्लड ट्री' कुदरत के करिश्मे का एक नूमना है। किसी छाते की तरह नजर आने वाले ये पेड़ 650 साल तक जिंदा रह सकते हैं और इनकी ऊंचाई 33 से 39 फीट तक हो सकती है। जहां दूसरे पेड़ों को काटने पर सफेद और पीला गोंद निकलता है, वहीं इस पेड़ को काटने पर लाल रंग का रेजिन निकलता है जो खून की तरह लगता है और इसी वजह से इन्हें ड्रैगन ब्लड ट्री नाम दिया गया है। सोकोट्रा टापू पर पेड़ों की कम से कम 37% ऐसी प्रजातियां हैं, जो दुनिया में कहीं और नहीं पाई जातीं।

सोकोत्रा द्वीप समूह का मूल निवासी ड्रैगन ब्लड ट्री पेड़ से गहरे लाल रंग का राल निकलता है जिसे अक्सर 'ड्रैगन का खून' कहा जाता है, जिसे सदियों से पारंपरिक चिकित्सा, रंगाई और अनुष्ठान समारोहों सहित इसके विभिन्न उपयोगों के लिए बेशकीमती माना जाता रहा है. ड्रैगन ब्लड ट्री सोकोट्रा द्वीपसमूह का मूल निवासी है, जो हिंद महासागर में स्थित यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है. इस पेड़ की सबसे खास विशेषताओं में से एक इसकी छतरी जैसा पत्तियों और शाखाएं हैं. जो सर्पिल रूप से व्यवस्थित समूह होते हैं. यह आकार इसे अन्य पेड़ों प्रजातियों से अलग करता है और इसके रहस्य को बढ़ाता है.

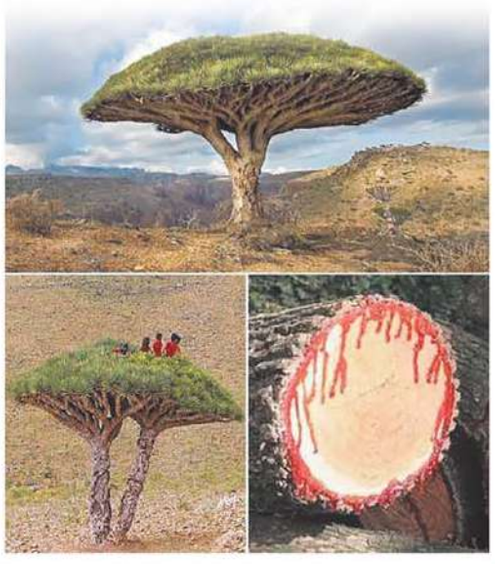
ड्रैगन ब्लड ट्री सोकोट्रा निवासियों की लोककथाओं और परंपराओं में एक अहम स्थान रखता है, जिन्होंने इसके रहस्यमय गुणों और औषधीय लाभों के लिए इसका सम्मान किया है. यह पीढ़ियों से स्थानीय रीति-रिवाजों और मान्यताओं का एक अभिन्न अंग रहा है. सूखे हालातों में पनपने वाले, ड्रैगन ब्लड ट्री ने अपने कठोर वातावरण में जीवित रहने के लिए खुद को बेहतरीन तरीके से ढाला है. अपने तने में पानी जमा करने और कम से कम संसाधनों का उपयोग करने की इसकी काबिलियत कठोर जलवायु में इसके लचीलेपन को दिखाती है. अपने कठोर मिजाज के बावजूद, इस पेड़ की वृद्धि दर धीमी है, कुछ नमूनों को परिपक्व होने में दशकों लग जाते हैं. यह धीमी वृद्धि इसकी प्राचीन ज्ञान की भावना में योगदान देती है.

आर्थिक रूप से भी विशेष

कई विशेषताओं से परिपूर्ण ये पेड़ सदियों से आर्थिक रूप से भी महत्वपूर्ण रहे हैं। स्थानीय लोग इसे पशुओं के आहार के लिए इस्तेमाल करते हैं। इसके फल से गायों और बकरियों की सेहत भी अच्छी रहती है।

संकट में है वजूद

इतनी विशेषताओं के बावजूद भी इन पेड़ों का भविष्य संकट में है। इसकी सबसे बड़ी वजह है जलवायु परिवर्तन जिसके चलते सोकोट्रा द्वीपसमूह सूख रहा है। एक्सपर्ट्स को डर है कि 2080 तक इनके रहने के 45% इलाके खत्म हो जाएंगे।



दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com
रायपुर, गुरूवार 12 नवम्बर 2026

राष्ट्रपति, केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल और केंद्रीय राज्यमंत्री ने छत्तीसगढ़ को प्रदान किए तीन राष्ट्रीय स्वच्छता पुरस्कार

बिल्हा बना देश का सबसे स्वच्छ शहर, बिलासपुर को रीवर फ्रंट टाउन श्रेणी में मिला देश में दूसरा स्थान



नई दिल्ली। स्वच्छ सर्वेक्षण 2025-26 में छत्तीसगढ़ ने तीन राष्ट्रीय पुरस्कार हासिल कर गौरवपूर्ण उपलब्धि दर्ज की। नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित समारोह में राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु, केंद्रीय आवासन एवं शहरी कार्य मंत्री श्री मनोहर लाल तथा केंद्रीय आवासन एवं शहरी कार्य राज्य मंत्री श्री तोखन साहू ने छत्तीसगढ़ के तीन नगरीय निकायों को राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किए।

इस उपलब्धि में बिलासपुर का विशेष स्थान रहा, जिसे देश का दूसरा सबसे स्वच्छ रीवर फ्रंट टाउन घोषित किया गया। वहीं 20 हजार से कम आबादी वाले शहरों की श्रेणी में बिल्हा को देश का सबसे स्वच्छ शहर चुना गया। उल्लेखनीय है कि बिल्हा पिछले वर्ष भी इस श्रेणी में देश में प्रथम स्थान पर रहा था। रायपुर को छत्तीसगढ़ का सबसे स्वच्छ शहर होने का पुरस्कार मिला।इस अवसर पर केंद्रीय राज्यमंत्री श्री तोखन साहू ने कहा कि छत्तीसगढ़ के लिए यह अत्यंत गौरव और प्रसन्नता का विषय है कि राज्य के तीन नगरीय निकायों ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई है। बिल्हा का लगातार दूसरे वर्ष देश में स्वच्छता के क्षेत्र में शीर्ष स्थान प्राप्त करना और बिलासपुर का रीवर फ्रंट टाउन श्रेणी में दूसरा स्थान हासिल करना विशेष उपलब्धि है। यह प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के स्वच्छ भारत मिशन के संकल्प को साकार करने की दिशा में केंद्र एवं राज्य सरकारों के समन्वित प्रयासों का परिणाम है।श्री साहू ने इस उपलब्धि के लिए मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय, उप मुख्यमंत्री एवं नगरीय प्रशासन मंत्री श्री अरुण साव, नगरीय निकायों के जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों, स्वच्छता कर्मियों तथा जागरूक नागरिकों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि स्वच्छता केवल सरकारी अभियान नहीं, बल्कि जनभागीदारी से संचालित एक सतत जनआंदोलन है। हमारा संकल्प है कि छत्तीसगढ़ के शहर स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण और नागरिक सुविधाओं के क्षेत्र

कैट के भव्य दीपावली मिलन समारोह में उमड़ा व्यापारी समाज



रायपुर (विश्व परिवार)। देश के सबसे बड़े व्यापारिक संगठन कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (ष्टद्बद्ध) के नेशनल वाइस चेयरमेन एवं राष्ट्रीय व्यापारी कल्याण बोर्ड के सदस्य श्री अमर पारवानी, छत्तीसगढ़ इकाई के चेयरमेन श्री जितेन्द्र दोशी, श्री विक्रम सिंहदेव, प्रदेश अध्यक्ष श्री परमानंद जैन, वाइस चेयरमेन श्री सुरिन्दर सिंह, श्री जीवत बजाज, प्रदेश महामंत्री श्री अवनीत सिंह, प्रदेश कोषाध्यक्ष श्री विजय पटेल, कार्यकारी अध्यक्ष श्री राजेन्द्र जग्गी, श्री वासु माखीजा, श्री राम मंधान, श्री भरत जैन, श्री राकेश ओचवानी एवं श्री शंकर बजाज ने संयुक्त रूप से बताया कि रायपुर। देश के सबसे बड़े व्यापारिक संगठन कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (ष्टद्बद्ध) छत्तीसगढ़ द्वारा आयोजित भव्य दीपावली मिलन समारोह हर वर्ष की तरह इस वर्ष अभूतपूर्व उत्साह, उल्लास और गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ। समारोह में पूरे छत्तीसगढ़ के विभिन्न व्यापारिक संगठनों के प्रतिनिधियों, व्यापारी बंधुओं, उद्योगपतियों, जनप्रतिनिधियों, युवा एवं महिला उद्यमियों तथा गणमान्य नागरिकों की बड़ी संख्या में उपस्थिति रही। समारोह ने प्रदेश के व्यापारी समाज की एकजुटता, आपसी सौहार्द और ब्राण्ड् की सशक्त संगठनात्मक भूमिका का शानदार परिचय दिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ पारंपरिक दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। इस अवसर पर ष्टस्ड्ढष्ट के चेयरमैन श्री राजीव अग्रवाल, छत्तीसगढ़ राज्य नागरिक आपूर्ति निगम के अध्यक्ष श्री संजय श्रीवास्तव, छत्तीसगढ़ राज्य सहकारी बैंक मर्यादित के अध्यक्ष श्री केदारनाथ गुप्ता, छत्तीसगढ़ राज्य अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष श्री अमरजीत सिंह छाबड़ा, संगठन के संरक्षक श्री आसुदामल वाधवानी, श्री हनुमान प्रसाद अग्रवाल, श्री रामजी भाई पटेल, श्री परविन्द्रर सिंह भाटिया सलाहकार श्री उत्तम गोलछा, श्री भरत बजाज, श्री जगदीष पटेल, श्री मनमोहन अग्रवाल, श्री संजय रावत, श्री पवन वाधवा ष्टद्बद्ध के राष्ट्रीय वाइस चेयरमैन एवं राष्ट्रीय व्यापारी कल्याण बोर्ड (भारत सरकार) के सदस्य श्री अमर पारवानी सहित वरिष्ठ पदाधिकारियों, एवं अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

राष्ट्रीय वाइस चेयरमैन श्री अमर पारवानी ने कहा कि व्यापारी समाज देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है ।

स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत रायपुर में लगभग 53 सीटीयू स्थलों का कायाकल्प



रायपुर (विश्व परिवार)। स्वच्छता को जनआंदोलन का स्वरूप देने एवं राजधानी शहर रायपुर के सार्वजनिक स्थलों को स्वच्छ, सुंदर और व्यवस्थित बनाने के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा आयोजित एक माहव्यापी 'स्वच्छता ही सेवा अभियान 2026' के अंतर्गत रायपुर नगर पालिक निगम द्वारा व्यापक स्तर पर सीटीयू (क्लीनलिनेस टारगेट यूनिट) ट्रांसफर्मेशन का कार्य कराया गया। विगत दिनांक 17 सितंबर 2026 से 17 अक्टूबर 2026 तक संचालित इस अभियान के दौरान रायपुर शहर में लगभग 53 सीटीयू स्वच्छता लक्षित ईकाई स्थलों का कायाकल्प किया गया।

स्वच्छता ही सेवा अभियान के अंतर्गत रायपुर नगर पालिक निगम की महापौर श्रीमती मीनल चौबे और स्वास्थ्य विभाग अध्यक्ष श्रीमती गायत्री चंद्राकर और आयुक्त श्री संबित मिश्रा के निर्देश पर नगर निगम के सभी 10 जोनों के स्वास्थ्य विभाग की टीमों द्वारावार्ड पार्षदों की अगुवाई और जोन कमिश्नरों और जोन स्वास्थ्य अधिकारियों के मार्गनिर्देशन में राजधानी शहर रायपुर के ऐसे सार्वजनिक स्थलों एवं चिन्हित स्थानों की पहचान की गई, जहां पूर्व में गंदगी, कचरे का जमाव, अव्यवस्था अथवा अनुपयोगी स्थिति जैसी समस्याएं थीं। नगर निगम द्वारा इन स्थलों पर विशेष स्वच्छता अभियान चलाकर कचरे का निष्पादन, साफ-सफाई, रंग-रोगन, सौंदर्यीकरण एवं आवश्यक सुधार कार्य कराए गए। इन प्रयासों से कई स्थानों को स्वच्छ, आकर्षक एवं उपयोगी स्वरूप प्रदान किया गया।

वच्छता ही सेवा अभियान की विशेष उपलब्धि यह रही कि लगभग 53 सीटीयू स्थलों का परिवर्तन रायपुर नगर पालिक निगम द्वारा स्वयं तथा विभिन्न संस्थाओं, सामाजिक संगठनों और नागरिकों की जनभागीदारी के माध्यम से सुनिश्चित किया गया। इससे न केवल सार्वजनिक स्थलों की तस्वीर बदली, बल्कि स्वच्छता के प्रति सामूहिक जिम्मेदारी एवं नागरिक सहभागिता की भावना भी मजबूत हुई।

सीटीयू ट्रांसफर्मेशन के प्रमुख स्थल

अभियान के अंतर्गत कायाकल्प किए गए प्रमुख स्थलों में वार्ड क्रमांक 61 स्थित जल विभाग, भाठागांव एवं साबुन डबरी तालाब , वार्ड क्रमांक 44 स्थित पुराना नगर निगम भवन, वार्ड क्रमांक 38 स्थित दशहरा मैदान (स्वामी आत्मानंद वार्ड), वार्ड क्रमांक 59 में गौसिया मैदान के पास का क्षेत्र, वार्ड क्रमांक 46 स्थित गुरु तेग बहादुर उद्यान तथा वार्ड क्रमांक 42 स्थित जगन्नाथ मंदिर क्षेत्र सहित अन्य स्थल शामिल हैं।

रायपुर नगर पालिक निगम द्वारा स्वच्छता ही सेवा अभियान के दौरान किए गए ये कार्य शहर में स्वच्छता के स्थायी वातावरण के निर्माण एवं सार्वजनिक स्थलों के बेहतर रखरखाव की दिशा में महत्वपूर्ण पहल हैं। नगर निगम का उद्देश्य केवल इन स्थलों का कायाकल्प करना ही नहीं, बल्कि नागरिकों को इनके संरक्षण एवं

भाजपा सरकार बनने के बाद बिजली बिल जनता की लूट का माध्यम बन गया है:कांग्रेस

- शांति, सुरक्षा और अंत्योदय के प्रकाश से आलोकित हो रहा छत्तीसगढ़ : किरण देव

हर उपभोक्ता के बिल में अतिरिक्त सुरक्षा निधि की वसूली गलत



रायपुर (विश्व परिवार)। प्रदेश कांग्रेस संचार विभाग के अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि बिजली की कीमतों में 33 प्रतिशत वृद्धि, फिर कोयले के दाम पर अतिरिक्त शुल्क और अब बिजली बिल में अतिरिक्त सुरक्षा निधि जोड़कर जनता की जेब पर डाका डाल रही भाजपा सरकार।छत्तीसगढ़ में भाजपा सरकार बनने के बाद बिजली आम जनता की सुविधा के बजाय उसकी जेब पर बोझ और सरकारी वसूली का माध्यम बनती जा रही है। सरकार ने पहले ही बिजली की दरों में लगभग 33 प्रतिशत की वृद्धि कर आम उपभोक्ताओं पर महंगाई का बोझ डाल दिया है। इसके बाद कोयले की कीमतों के नाम पर अतिरिक्त शुल्क का बोझ उपभोक्ताओं पर डाला गया और अब इस माह के बिजली बिल में अतिरिक्त सुरक्षा निधि जोड़कर जनता से वसूली की जा रही है।

कांग्रेस संचार प्रमुख ने कहा कि आखिर बिजली उपभोक्ता कब तक भाजपा सरकार की मनमानी वसूली का बोझ उठाएंगे ?बिजली कनेक्शन लेते समय विद्युत कंपनी उपभोक्ताओं से सुरक्षा निधि जमा कराती है। इसके अलावा मीटर लगाने के नाम पर भी शुल्क लिया जाता है। जब कनेक्शन देते समय सुरक्षा निधि पहले ही जमा करा ली गई है, तो फिर हर साल अतिरिक्त सुरक्षा निधि वसूलने का औचित्य क्या है? विद्युत कंपनी को जनता को इसका स्पष्ट जवाब देना चाहिए कि पहले से जमा सुरक्षा निधि का क्या हुआ और बार-बार उपभोक्ताओं की जेब पर बोझ क्यों डाला जा रहा है? कांग्रेस संचार प्रमुख सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि भाजपा सरकार में बिजली उपभोक्ताओं को राहत देने के बजाय हर स्तर पर उनसे अतिरिक्त वसूली की जा रही है। बिजली की बढ़ी हुई दरें, अतिरिक्त कोयला शुल्क और अब सुरक्षा निधि के नाम पर वसूली ने आम परिवारों, मध्यम वर्ग, किसानों और छोटे कारोबारियों का बजट बिगाड़ दिया है। कांग्रेस संचार प्रमुख सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि भाजपा सरकार को यह समझना चाहिए कि बिजली कोई विलासिता की वस्तु नहीं, बल्कि आम आदमी की बुनियादी जरूरत है। सरकार का दायित्व जनता को सस्ती और निर्बाध बिजली उपलब्ध कराना है, न कि अलग-अलग मदों के नाम पर हर महीने और हर साल उपभोक्ताओं पर नए आर्थिक बोझ लादना।

जनजातीय गौरव दिवस कार्यक्रम को सफल बनाने बैठक संपन्न



रायपुर (विश्व परिवार)। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश संगठन महामंत्री कर्मवीर सिंह ने आगामी 15 नवम्बर को धरमजयगढ़ में होने वाले जनजातीय गौरव दिवस कार्यक्रम के निमित्त राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन के प्रवास के मद्देनजर बुधवार को एक महत्वपूर्ण बैठक ली।भाजपा प्रदेश संगठन महामंत्री श्री सिंह ने बैठक के दौरान कार्यक्रम की रूपरेखा पर विस्तार से चर्चा की और उपस्थित सभी लोगों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इस अवसर पर श्री सिंह ने सभी से आह्वान किया कि वे कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए पूरी तन्मयता और समर्पण के साथ जुट जाएं। ?बैठक में सभी प्रमुख लोग उपस्थित रहे।

सकल जैन समाज को एक सूत्र में समाहित करते हुए शाश्वत महामंत्र नवकार का 35वाँ कार्यक्रम संपन्न





पत्रकारिता क्षेत्र में श्री प्रदीप जी जैन का जीवदया क्षेत्र में श्री पदम जी डाकलिया को जैन गौरव सम्मान से सम्मानित किया गया।

रायपुर (विश्व परिवार)। सकल जैन समाज को एक सूत्र में समाहित करते हुए शाश्वत महामंत्र नवकार का प्रत्येक माह के द्वितीय रविवार को प्रात: 9 से 9:48 बजे तक जाप कराते आ रहे नवकार जाप ग्रुप के 35 वें नवकार जाप का आयोजन वर्धमान नगर स्थित श्री वर्धमान जिनालय में श्री मेघराज बेंगानी धार्मिक एवं परमार्थिक ट्रस्ट के सहयोग से किया गया। पावन सानिध्य प्राप्त हुआ आचार्य श्री पीयूष सागर जी के शिष्य रत्न मुनिराज श्री शाश्वत रत्न सागर जी ठाणा - 2 का। नवकार जाप संपन्नता पश्चात उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को संबोधित करते हुए मुनिश्री ने कहा कि नवकार महामंत्र अनादि काल से इसी अर्थात वर्तमान स्वरूप में सकल जैन समाज में प्रचलित है व अनादि काल तक प्रचलित रहेगा। इसी लिए इस मंत्र को महामंत्र कहा जाता है। नवकार महामंत्र के पांचों पदों में गुणों को ही नमन किया गया है न कि किसी व्यक्ति विशेष को। महामंत्र हमें प्रेरणा देता है कि मनुष्य भी इस? भव में अपने पुरुषार्थ का परिचय देते हुए इन गुणों को धारण कर अपनी आत्मा का कल्याण कर परम वैभव का पा सकता है।आयोजन में पत्रकारिता क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य हेतु श्री प्रदीप जी जैन का जीवदया क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य हेतु श्री पदम जी डाकलिया को जैन गौरव सम्मान से सम्मानित किया गया।

बैंक ऑफ बड़ौदा ने गुयाना में नए कार्यालय



गुयाना (विश्व परिवार)। भारत के अंतरराष्ट्रीय बैंक, बैंक ऑफ बड़ौदा ने गुयाना में अपने नए प्रधान कार्यालय एवं जॉर्जटाउन शाखा भवन के साथ-साथ बैंक ऑफ बड़ौदा विरासत केंद्र का उद्घाटन किया। यह विरासत केंद्र बैंक की समृद्ध विरासत और गुयाना के साथ उसके दीर्घकालिक संबंधों को प्रदर्शित करता है। बैंक ने गुयाना की स्वतंत्रता से लगभग दो महीने पूर्व, 31 मार्च 1966 को देश में अपना परिचालन शुरू किया था। वर्ष 1999 में बैंक के स्थानीय परिचालन को उसकी पूर्ण स्वामित्व वाली अनुषंगी कंपनी बैंक ऑफ बड़ौदा (गुयाना) इंक. में परिवर्तित कर दिया गया। वर्तमान में बैंक गुयाना में दो शाखाओं के माध्यम से अपनी सेवाएं प्रदान कर रहा है। यह गुयाना में उपस्थिति रखने वाला एकमात्र भारतीय बैंक है।

नए भवन एवं विरासत केंद्र का उद्घाटन गुयाना सहकारी गणराज्य के महामहिम राष्ट्रपति डॉ. मोहम्मद इरफान अली ने किया। इस अवसर पर बैंक ऑफ बड़ौदा के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी डॉ. देबदत्त चांद, राष्ट्रपति कार्यालय में वित्त विभाग का दायित्व संभालने वाले वरिष्ठ मंत्री डॉ. अश्नी सिंह, गुयाना में भारत के उच्चायुक्त श्री चिन्मय नाइक, जॉर्जटाउन के महापौर श्री अल्फ्रेड मेंटोर, बैंक ऑफ गुयाना के गवर्नर डॉ. गोबिंद गंगा तथा बैंक ऑफ बड़ौदा (गुयाना) इंक. के अध्यक्ष श्री निशांत रंजन, निदेशक श्री शेखर मोसेस मल्लमपाटी एवं प्रबंध निदेशक श्री मोहित भाकुनी उपस्थित थे इस अवसर पर बैंक ऑफ बड़ौदा के प्रबंध निदेशक एवं

त्यौहार एवं पूजा के दौरान यात्रियों की संरक्षा एवं सुगम यात्रा के लिए दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे द्वारा किये गये हैं व्यापक प्रबंध



बिलासपुर/रायपुर। त्योहारों एवं पूजा के दौरान यात्रियों की बढ़ती आवाजाही को ध्यान में रखते हुए दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा, सुरक्षा एवं सुचारु रेल परिचालन सुनिश्चित करने के लिए व्यापक प्रबंध किए गए हैं। इस दौरान सभी प्रमुख स्टेशनों एवं यात्री गाड़ियों में भीड़ प्रबंधन, सुरक्षित आवाजाही सुनिश्चित करने, यात्री सुविधाओं की उपलब्धता तथा यात्रियों को सुरक्षित, सुगम एवं सुविधाजनक यात्रा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से विशेष ट्रेनों के संचालन, होल्डिंग एरिया, भीड़ प्रबंधन, खानपान, टिकटिंग, जन-जागरूकता एवं सुरक्षा व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

भीड़प्रबंधन एवं सुरक्षा व्यवस्था

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के सभी प्रमुख रेलवे स्टेशनों एवं यात्री गाड़ियों में भीड़ प्रबंधन, सुरक्षा व्यवस्था तथा यात्रियों को आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराने के लिए अतिरिक्त कर्मचारियों की तैनाती की गई है। इस दौरान सभी फ्रंटलाइन कर्मचारी 24 घंटे सतत ड्यूटी पर तैनात रहकर यात्रियों की सहायता एवं व्यवस्था बनाए रखने में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) एवं वाणिज्य विभाग की संयुक्त टीमें प्रमुख स्टेशनों पर निरंतर निगरानी कर रही हैं।

यात्रियों को ट्रेनों के आगमन, प्रस्थान एवं अन्य आवश्यक जानकारियां समय पर उपलब्ध कराने के लिए सार्वजनिक उद्घोषणा प्रणाली (पीए सिस्टम) एवं डिजिटल डिस्प्ले संकेतकों का प्रभावी उपयोग किया जा रहा है। इसके साथ ही आरपीएफ एवं सिविल डिफेंस की टीमें लाउड हेलर एवं सीटी के माध्यम से यात्रियों को लगातार जागरूक करते हुए भीड़ प्रबंधन एवं सुरक्षित आवागमन सुनिश्चित कर रही हैं।

24 घंटे वार रूम से नियंत्रण

मुख्यालय में डिजिटल वार रूम की स्थापना की गई है जिसमें ट्रेनों के परिचालन एवं स्टेशनों पर भीड़ की स्थिति पर नजर रखने के लिए रियल-टाइम मॉनिटरिंग की जा रही है। इसके साथ ही रेलवे स्टेशन पर यात्रियों की शिकायतों एवं समस्याओं का त्वरित संज्ञान लेकर शीघ्र निराकरण सुनिश्चित किया जा रहा है ।

सभी प्रमुख रेलवे स्टेशनों पर यात्रियों की सुविधा एवं बेहतर व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था, स्वच्छ पेयजल एवं साफ-सफाई पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। इसके अतिरिक्त, स्टेशनों पर किसी भी आपातकालीन स्थिति से निपटने एवं





प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा आसमां पब्लिसर्स इंडिया प्रा.लि. पंजाब नेशनल बैंक के सामने, जयस्तंभ चौक, रायपुर से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354